Nehru Gram Bharati (Deemed to be University)
Prayagraj, Uttar Pradesh , INDIA

M.A. [Jyotish]
Syllabus

[Department of Sanskrit]

[Effective From 2025-26 Onwards]

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम 80 क्रेडिट का होगा,
पाठ्यक्रम 4 सेमेस्टर में विभाजित है।
प्रत्येक सेमेस्टर 20 क्रेडिट का होगा। प्रत्येक सेमेस्टर 20 क्रेडिट निम्नलिखित प्रकार में विभाजित होगा।

(A) कोर क्रेडिट जिसमें तीन प्रश्न पत्र होंगे, प्रत्येक प्रश्न पत्र 4 क्रेडिट का होगा। 4X3 = 12 क्रेडिट

(B) Elective course अर्थात 4th प्रश्नपत्र जिसमें एक प्रश्नपत्र 03 क्रेडिट का होगा 3X1= 3 क्रेडिट

Vth Paper & VIth Paper विद्यार्थी अपने विषय एवं अर्न्तविषयी रूचि के अनुसार चयन करने के लिए स्वतन्त्र होगा।

उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु Vth Paper & VIth Paper का विभाजन अधोलिखित प्रकार से होगा।

(C) अर्न्तविषयी (Inter Disciplnary), जिसमें एक प्रश्न पत्र का होगा–विद्यार्थी अपने मुख्य विषय में वैकल्पिक विषय (Optional Paper) चयन करना होगा जिसका Credit2 होगा 2X1= 2 क्रेडिट

(D)अर्न्तविषयी या व्यक्तिक विषय (Personality Development) विद्यार्थी अपने विभाग/संकाय एवं विश्वविद्यालय प्रदत्त ऐच्छिक विषयों में किसी एक का चयन करेगा, Credit 3X 1= 3 क्रेडिट होगा (इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य निम्नलिखित की पूर्ति करना है)

Personality Development (व्यक्तिक विकास)

Skill Development (कौशल विकास)

M.A. [Jyotish]

Session 2025 – 26

YEAR	SEMESTER	Course TITLE	Course Code	MAJOR/ MINOR	Total Credits
1ST	IST	1–ब्रहमांड तथा खगोल विज्ञान	MAJY101	Core	04
		2–करण ज्योति गणित	MAJY102	Core	04
		3–पंचांग विमर्श	MAJY103	Core	04
		किसी एक का चयन करें। 1–वास्तु ज्योतिष 2–प्रश्न कुण्डली 3–हस्तरेखा	MAJY104A/ MAJY104B/ MAJY104C	Elective	03
		विवाह, मेलापक	MAJY105	(Inter Disciplinary Skill)	02
		ज्योतिष के मूलभूत सिद्धांत	MAJY106	(Intra Disciplinary)	03
	IIND	1–सैद्धान्तिक ज्योर्तिविज्ञान	MAJY201	Core	04
		2–वैदिक गणित	MAJY202	Core	04
		3–मूहूर्त ज्योतिष	MAJY203	Core	04
		किसी एक का चयन करें। 1–प्रौढ वास्तु विज्ञान 2–रत्नोंपचार 3–वेदांग ज्योतिष	MAJY204A/ MAJY204B/ MAJY204C	Elective	03
		ग्रहोपचार पद्धति	MAJY205	(Inter Disciplinary Skill)	02
		कर्मकाण्ड पद्धति	MAJY206	(Intra Disciplinary)	03
2ND	IIIRD	1–सिद्धांत ज्योतिष	MAJY301	Core	04
		2–फलित ज्योतिष	MAJY302	Core	04
		3–परासरीय ज्योतिष	MAJY303	Core	04
		किसी एक का चयन करें। 1–चिकित्सा ज्योतिष 2–फेंग सूई 3–रमल ज्योतिष	MAJY304A/ MAJY304B/ MAJY304C	Elective	03
		विवाह पद्धति एवं श्राद्ध कर्म	MAJY305	(Inter Disciplinary Skill)	02
		ज्योतिष एवं वास्तु में मूहूर्त निर्धारण	MAJY306	(Intra Disciplinary)	03
	IVTH	1–चन्द्र श्रृगोन्नति एवं वेध परम्परा	MAJY401	Core	04
		2–जैमिनी सूत्र	MAJY402	Core	04
		3–अध्यात्म ज्योतिष	MAJY403	Core	04
		किसी एक का चयन करें। 1–प्रश्न ज्योतिष 2–वर्षफल 3–लाल किताब	MAJY404A/ MAJY404B/ MAJY404C	Elective	03
		नवग्रह पूजन, वेदी निर्माण एवं सम्बन्धित कर्मकाण्ड	MAJY405	(Inter Disciplinary Skill)	02
		ज्योतिष एवं वास्तु द्वारा उपचार	MAJY406	(Intra Disciplinary)	03

M.A. - Jyotish

SEMESTER-I

M.A. JYOTISH	Year: M. A. 1st Year	Semester: Ist
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY101**	Course/Paper Title: **ब्रह्मांड का परिचय और खगोल विज्ञान का इतिहास**	

Course Objective & Outcomes:

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

CO1 : छात्र खगोल विज्ञान के ऐतिहासिक विकास, इसकी शाखाओं और मुख्य उपकरणों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

CO2 : छात्र सौरमंडल के विभिन्न पिंडों की संरचना, विशेषताओं और गतियों को समझ सकेंगे।

CO3 : छात्र तारों के जीवनचक्र और उनसे संबंधित खगोलीय घटनाओं की वैज्ञानिक समझ विकसित करेंगे।

CO4 : छात्र ब्रह्मांड की उत्पत्ति, संरचना और उसमें मौजूद विविध खगोलीय इकाइयों के बारे में ज्ञान अर्जित करेंगे।

CO5 : छात्र आधुनिक खगोल विज्ञान की तकनीकों, उपकरणों और भारत की खगोल विज्ञान में भूमिका को समझ सकेंगे।

Credit (L+T+P): 2+0+2	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+60

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**ब्रह्मांड का परिचय और खगोल विज्ञान का इतिहास** • ब्रह्मांड की उत्पत्ति की अवधारणाएँ– स्थिर ब्रह्मांड, बिग बैंग सिद्धांत • प्रारंभिक खगोल विज्ञान–भारतीय, ग्रीक, इस्लामी योगदान • आधुनिक खगोल विज्ञान का विकास • खगोल विज्ञान की शाखाएँ–वेधशाला खगोल विज्ञान, भौतिक खगोल विज्ञान, खगोलीय यांत्रिकी • खगोलशास्त्र में प्रयुक्त एकक एवं मात्रक	6
II	**सौरमंडल** • सूर्य की संरचना एवं ऊर्जा का स्रोत • ग्रह–आंतरिक और बाह्य ग्रहों की विशेषताएँ • उपग्रह, क्षुद्रग्रह, पुच्छल तारे, उल्का • ग्रहों की कक्षा और गति के नियम (केपलर एवं न्यूटन के नियम) • पृथ्वी की गति, ऋतुओं का कारण, ग्रहण	6
III	**तारे और तारामंडल** • तारों की उत्पत्ति, जीवन चक्र और अंत (श्वेत बौने, न्यूट्रॉन तारे, ब्लैक होल) • तारे का वर्णक्रम, तापमान, द्रव्यमान, चमक • HR डायग्राम (हट्ज़्स्प्रंग–रसेल आरेख) • तारामंडल और नक्षत्र–प्रमुख भारतीय और पाश्चात्य तारामंडल • दूरी मापन की विधियाँ–पारलैक्स, प्रकाश–वर्ष	6

IV	**आकाशगंगाएँ और ब्रह्मांड** • आकाशगंगाओं के प्रकार–सर्पिल, दीर्घवृत्त, अनियमित • हमारी आकाशगंगा–मिल्की वे • ब्रह्मांड की संरचना और विस्तार • डार्क मैटर और डार्क एनर्जी की भूमिका • खगोल भौतिकी की प्रमुख अवधारणाएँ	6
V	**आधुनिक खगोल विज्ञान और अनुसंधान** • रेडियो खगोलविज्ञान, एक्स–रे खगोलविज्ञान • अंतरिक्ष वेधशालाएँ (जैसे–हबल टेलीस्कोप, जेम्स वेब टेलीस्कोप) • भारत में खगोल विज्ञान संस्थान (ISRO] ARIES] IUCAA) • खगोल विज्ञान में करियर और शोध की संभावनाएँ	6

Suggested Readings:

(Suggested Readings) : 1. ब्रह्मांड तथा खगोल विज्ञान प्रो. राधाकृष्ण

एक सरल हिंदी पुस्तक जो खगोल विज्ञान के मूल सिद्धांतों को स्पष्ट करती है।

ब्रह्मांड और खगोल विज्ञान दृ डॉ. ओंकारनाथ शर्मा

2. वैदिक एवं आधुनिक खगोल सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन।

The Fabric of the Cosmos – Brian Greene

3. ब्रह्मांड की आधुनिक अवधारणाएँ जैसे समय, अंतरिक्ष, और क्वांटम सिद्धांत पर लोकप्रिय विज्ञान पुस्तक।

A Brief History of Time – Stephen Hawking

4. ब्रह्मांड की उत्पत्ति, ब्लैक होल, समय और बिग बैंग सिद्धांत पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक।

Vedāṅga Jyotiṣa of Lagadha ¼with Hindi commentary½

5. वैदिक काल का प्राचीन ज्योतिष ग्रंथ, जिसमें खगोल एवं पंचांग गणना की विधियाँ दी गई हैं।

Jyotish Ratnakar – Pt- Harikrishna Sharma

6. पारंपरिक भारतीय खगोलशास्त्र और पंचांग निर्माण की विधियाँ।

Bhagola Vigyan (HkkSxksy foKku) – Bhartiya Vidya Bhavan

7. प्राचीन भारतीय भूगोल और खगोल का समन्वित अध्ययन।

Astronomy: A Self&Teaching Guide – Dinah L- Moche

8. आधुनिक खगोल विज्ञान सीखने के लिए स्व–अध्ययन हेतु सरल भाषा में।

Purāṇic Cosmology – (Compiled from various Purāṇas)

9. ब्रह्मांड की वैदिक अवधारणाओं को पुराणों के माध्यम से जानने हेतु।

Time and Cosmology in Hinduism – Subhash Kak

10. वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान और काल चक्र पर एक समीक्षात्मक दृष्टिकोण।

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

M.A. - Jyotish

SEMESTER-I

M.A. JYOTISH	Year: M. A. 1st Year	Semester: Ist
Pedagogy:		
Course Code: MAJY102	Course/Paper Title: करण ज्योति गणित	

Course Objective & Outcomes:

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

CO1 : छात्र प्राचीन भारतीय करण ग्रंथों और उनकी गणितीय विधियों के ऐतिहासिक महत्व को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र ग्रहों की स्थिति ज्ञात करने की पारंपरिक गणनाओं को व्यावहारिक रूप से समझ सकेंगे।

CO3 : छात्र पंचांग निर्माण हेतु आवश्यक खगोलीय तत्वों की गणना करना सीखेंगे।

CO4 : छात्र सूर्य–चंद्र गणनाओं और पारंपरिक विधियों से ग्रहण पूर्वानुमान करना सीखेंगे।

CO5 : छात्र पारंपरिक गणनाओं की आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों से तुलना कर सकेंगे और डिजिटल उपकरणों में इनके उपयोग को समझ सकेंगे।

Credit (L+T+P): 2+0+2	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+60

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**करण ग्रंथों का परिचय और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य** • करण ज्योति गणित का अर्थ और महत्व • प्रमुख करण ग्रंथों का अध्ययन (आर्यभटीय, ब्रह्मस्फुट सिद्धांत, सिद्धान्त शिरोमणि) • प्राचीन भारतीय खगोलगणित में करणों का प्रयोग • गणना की विधियाँ और उद्देश्यों की विवेचना	6
II	**ग्रहों की स्थितियों की गणना** • ग्रहों की मध्यम और यथार्थ गति की अवधारणा • स्वग्रह और परग्रह की स्थिति निर्धारण की पद्धतियाँ • भिन्न करण ग्रंथों में ग्रहों की स्थिति की तुलना • उदाहरण सहित ग्रह स्थिति गणना	6
III	**तिथियाँ, नक्षत्र और योग** • तिथि, नक्षत्र, करण और योग की गणना • पंचांग निर्माण में इन गणनाओं की भूमिका • विभिन्न करण ग्रंथों के अनुसार गणना की विधियाँ • व्यावहारिक उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण	6
IV	• **चंद्र–सौर गणनाएँ एवं ग्रहण** • चंद्र और सौर मासों की अवधारणाएँ • अयनांश, विषुव और संक्रांति की गणना • चंद्र और सूर्य ग्रहण की गणना के मूल सिद्धांत	6

	• पारंपरिक करण पद्धतियों द्वारा ग्रहण गणना	
V	• **आधुनिक परिप्रेक्ष्य और तुलना** • आधुनिक खगोलगणित बनाम पारंपरिक करण विधियाँ • सटीकता, उपयोगिता और सीमाएँ • भारतीय खगोलगणित की वैज्ञानिक दृष्टि से प्रासंगिकता • करण विधियों का डिजिटलीकरण और तकनीकी संभावनाएँ	6

Suggested Readings:

करण ज्योति गणित–

सूर्य सिद्धांत (Surya Siddhanta) दृ संस्कृत मूल एवं हिंदी टीका सहित

1. प्राचीन भारतीय खगोल गणना का प्रमुख ग्रंथ, ग्रहों की गति, कालगणना, त्रिकोणमिति आदि की संपूर्ण जानकारी।

आर्यभटीयम् दृ आर्यभट (हिंदी/संस्कृत व्याख्या सहित)

2. भारत के महान गणितज्ञ व खगोलशास्त्री आर्यभट का ग्रंथ, जिसमें करण गणना की विधियाँ वर्णित हैं।

सिद्धांत शिरोमणि दृ भास्कराचार्य

3. खगोलीय गणना, ग्रहों की स्थिति, कक्षा, गति एवं यंत्रों के प्रयोग का विस्तृत वर्णन।

करण रत्नाकर दृ श्रीधराचार्य

4. एक श्रेष्ठ करण ग्रंथ जो पंचांग निर्माण की विधियों को स्पष्ट करता है।

पंचसिद्धांतिका दृ वराहमिहिर

5. पाँच प्रमुख खगोलीय सिद्धांतों का संकलनरू पितामहसिद्धांत, वासिष्ठसिद्धांत, रोमकसिद्धांत, पौलिशसिद्धांत और सूर्यासिद्धांत।

Jyotisha Siddhanta Kaumudi – V- S- Apte

6. खगोलीय सिद्धांतों और गणना की आधुनिक व्याख्या।

Modern Astronomy and Indian Legacy – S- Balachandra Rao

7. खगोल विज्ञान में भारतीय योगदान पर गहन विश्लेषण।

Indian Astronomy: A Source Book – S- N- Sen & K- V- Sarma

8. प्राचीन भारत के खगोल ग्रंथों का संग्रह और उनका वैज्ञानिक विश्लेषण।

Laghumanasa – Munjala

9. गणना के सरल सूत्रों के लिए प्रसिद्ध करण ग्रंथ।

Epicycles] Eclipses] and Astronomy in India – David Pingree

10. भारतीय ज्योतिष गणना पद्धति का पाश्चात्य दृष्टिकोण से अध्ययन।

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks
Internal Class Test – 10 Marks
Attendance/Behavior – 05 Marks

M.A. - Jyotish

SEMESTER-I

M.A. JYOTISH	Year: M. A. 1st Year	Semester: Ist
Pedagogy:		
Course Code: MAJY103	Course/Paper Title: पंचांग विमर्श	

Course Objective & Outcomes:

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

CO1: छात्र पंचांग की संरचना, उसके अंगों तथा विविध भारतीय पंचांग परंपराओं की बुनियादी समझ विकसित कर सकेंगे।

CO2 : छात्र तिथि, वार और नक्षत्र की गणना विधियों को समझकर पंचांग पढ़ने और विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

CO3 : छात्र योग, करण और चंद्र–सौर मासों से संबंधित गणनात्मक और व्यावहारिक ज्ञान अर्जित करेंगे।

CO4 : छात्र पंचांग निर्माण की विधियों को समझकर विभिन्न पंचांगों की गणनात्मक सटीकता का आकलन कर सकेंगे।

CO5 : छात्र पंचांग की सांस्कृतिक उपयोगिता और वर्तमान जीवन में उसकी भूमिका का सम्यक् मूल्यांकन कर सकेंगे।

Credit (L+T+P): 2+0+2	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :
Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+60	

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**पंचांग का स्वरूप एवं प्रकार** • पंचांग की परिभाषा और उद्देश्य • पंचांग के पाँच अंगरू तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण • विभिन्न प्रकार के पंचांग (सौर, चंद्र, सौर–चंद्र मिश्रित) • प्रमुख पंचांग परंपराएँ: विक्रम, शक, तामिल, मलयालम, बंगाली आदि	6
II	**तिथि, वार एवं नक्षत्र की गणना** • तिथि की गणना की विधि • वार निर्धारण और उसका खगोलशास्त्रीय आधार • नक्षत्रों की गणना और उनका ज्योतिषीय महत्व • पंचांग में इन तत्वों की व्याख्या का अभ्यास	6
III	**योग, करण एवं चंद्र–सौर मास** • योग और करण की गणना की विधियाँ • 27 योगों और 11 करणों का स्वरूप • चंद्र मास और सौर मास की अवधारणाएँ • अधिमास, क्षयमास और संक्रांति की गणना	6
IV	• **पंचांग निर्माण की पद्धतियाँ** • पंचांग निर्माण के गणनात्मक चरण • आधुनिक पंचांग निर्माण सॉफ्टवेयरों का परिचय • ग्रहीय गति, राशि परिवर्तन और त्योहार निर्धारण	6

	• पंचांग निर्माण में प्रयुक्त करण ग्रंथों की भूमिका	
V	**पंचांग का सांस्कृतिक और व्यावहारिक पक्ष** • मुहूर्त निर्धारण में पंचांग का उपयोग • विवाह, यज्ञ, त्यौहार, व्रत आदि में पंचांग की भूमिका • पंचांग और लोक जीवन का संबंध • पंचांग विमर्श की समसामयिक प्रासंगिकता	6

Suggested Readings:

पंचांग विमर्श

सूर्य सिद्धांत

1. पंचांग निर्माण के लिए मूल खगोलीय गणनाएँ, तिथि, नक्षत्र, योग आदि की गणना की विधियाँ।

आर्यभटीयम्–आर्यभट

2. कालगणना, ग्रहगति एवं तिथियों की गणना से संबंधित मूल गणितीय सिद्धांत।

पंचसिद्धांतिका–वराहमिहिर

3. पंचांग निर्माण के ऐतिहासिक एवं खगोलीय स्रोतों का विश्लेषण।

सिद्धांत शिरोमणि–भास्कराचार्य

4. ग्रहों की गति, तिथि–नक्षत्र निर्धारण और याम गणना जैसे विषयों की गणितीय पद्धति।

मधुसूदन पंचांग सिद्धांत – पं. मधुसूदन ओझा

5. पंचांग के तत्वों का विश्लेषणात्मक व्याख्यान, नक्षत्र, तिथि, योग की शास्त्रीय व्याख्या।

आधुनिक व्याख्यात्मक ग्रंथ/संदर्भ पुस्तकें

भारतीय पंचांग पद्धति–डॉ. रमाकांत शास्त्री

1. पंचांग के सभी पांच अंगों का सरल भाषा में विवरण एवं उनके धार्मिक, खगोलीय उपयोग।

Panchang and Indian Calendar & K- S- Charak

2. पंचांग निर्माण, ग्रह स्थिति, काल निर्धारण आदि का वैज्ञानिक विवेचन।

Introduction to Indian Astronomy & S- Balachandra Rao

3. पंचांग में प्रयुक्त खगोलशास्त्र का सरल और समन्वित अध्ययन।

Jyotish Shastra ka Saral Adhyayan – पं. सूर्यनारायण व्यास

4. ज्योतिष और पंचांग से संबंधित मूलभूत सिद्धांतों का वर्णन।

Vedic Timekeeping and Panchang System & Subhash Kak (अंग्रेज़ी)

5. वैदिक कालगणना प्रणाली का आधुनिक दृष्टिकोण से विश्लेषण।

अन्य उपयोगी संसाधनरू

***भारतीय पंचांग** (Drik Panchang / Lahiri Ephemeris)– व्यावहारिक उपयोग के लिए*

***राष्ट्रीय पंचांग** (Rashtriya Panchang) – Govt- of India publication*

कृष्णमूर्ति पंचांग निर्माण पद्धति – के. एस. कृष्णमूर्ति

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks
Internal Class Test – 10 Marks
Attendance/Behavior – 05 Marks

M.A. - Jyotish

SEMESTER-I

M.A. JYOTISH	Year: M. A. 1st Year	Semester: Ist
Pedagogy:		
Course Code: MAJY104A	Course/Paper Title: वास्तु ज्योतिष	

Course Objective & Outcomes:

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

CO1 : छात्र वास्तु शास्त्र की मूल अवधारणाओं, सिद्धांतों और ऐतिहासिक विकास को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र ग्रहों और वास्तु के परस्पर प्रभावों को समझते हुए वास्तु में ज्योतिषीय सुधार की भूमिका को पहचान सकेंगे।

CO3 : छात्र वास्तु सिद्धांतों के अनुसार भवन निर्माण और योजना निर्माण की बुनियादी समझ विकसित कर सकेंगे।

CO4 : छात्र वास्तु दोषों की पहचान कर उनके प्रभावों को न्यून करने के उपायों को जान सकेंगे।

CO5 : छात्र वास्तु ज्योतिष की आधुनिक प्रासंगिकता, आलोचना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन कर सकेंगे।

Credit (L+T+P): 03+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :
Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+60	

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**वास्तु शास्त्र का परिचय** • वास्तु का अर्थ, उद्देश्य और महत्व • वास्तु शास्त्र का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य • भारतीय वास्तु ग्रंथों (मानसार, समरांगण सूत्रधार आदि) का परिचय • पंचभूत सिद्धांत और दिशा विज्ञान	9
II	**वास्तु और ग्रहों का संबंध** • नवग्रह और दिशाओं का संबंध • ग्रहों की स्थिति का वास्तु पर प्रभाव • जन्म कुण्डली में गृह और वास्तु दोष • वास्तु शांति के ज्योतिषीय उपाय	9
III	**वास्तु के मूल तत्त्व और गृह निर्माण** • गृह निर्माण के नियम (भूमि चयन, दिशानिर्धारण, मापक) • भवन की योजनारू मुख्य द्वार, रसोई, शयनकक्ष, पूजा स्थल आदि की स्थिति • ब्रह्मस्थान, मंडल योजना और वास्तु पुरुष मंडल • सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा के स्रोत	9
IV	**वास्तु दोष और समाधान** • सामान्य वास्तु दोषों की पहचान • वास्तु दोष से उत्पन्न समस्याएँ	9

	• वास्तु दोष निवारण के पारंपरिक एवं ज्योतिषीय उपाय • वास्तु रत्न, रंग और ध्वनि उपचार	
V	**आधुनिक संदर्भ में वास्तु ज्योतिष** • वास्तु का समकालीन महत्वरू आवासीय, व्यावसायिक एवं औद्योगिक भवन • वास्तु और पर्यावरणीय समरसता • वास्तु एवं ऊर्जा विज्ञान (Vastu & Energy Science) • वैज्ञानिक आलोचना और प्रमाणिकता पर विमर्श	9

Suggested Readings:

मानसार वास्तुशास्त्र
1. प्राचीन ग्रंथ जिसमें वास्तु निर्माण की संपूर्ण प्रणाली दी गई है – भूमि परीक्षण, दिशाएं, गृह प्रकार आदि।
मयमतम् (Mayamata)
2. वास्तुशास्त्र पर आधारित एक प्रमुख ग्रंथ जो गृह व देवालय निर्माण की विस्तृत विधि बताता है।
विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र
3. भवन निर्माण, भूमि चयन, दिशा–निर्धारण और दोष निवारण की पारंपरिक विधियाँ।
समराङ्गण सूत्रधार – राजा भोज
4. स्थापत्य और वास्तुकला से संबंधित एक प्राचीन शास्त्रग्रंथ जिसमें ग्रहों और दिशाओं का संबंध भी वर्णित है।
आधुनिक ग्रंथ एवं विश्लेषणात्मक पुस्तकें
Vastu Shastra – B- B- Puri
1. वास्तु के वैज्ञानिक एवं पारंपरिक सिद्धांतों का समन्वय, चित्रों एवं योजनाओं सहित।
Astro Vastu – Dr- Bhojraj Dwivedi
2. ज्योतिष और वास्तु के मध्य संबंध, गृहों के आधार पर दिशा चयन, और दोष निवारण के उपाय।
Vastu Vidya: A Guide to Indian A
rchitecture – Julia G-
3. वास्तु शास्त्र की स्थापत्य शैली एवं उसके सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का आधुनिक विवेचन।
Vastu and Astrology – Dr- N- H- Sahasrabuddhe
4. वास्तु और ज्योतिष के अंतर्संबंधों की गहराई से चर्चा।
Astrological Applications in Vastu – Dr- E- S- Neelakantan
5. वास्तु में ग्रहों की भूमिका एवं कुंडली के आधार पर वास्तु परिवर्तन।
वास्तु रहस्य – पं. सत्यनारायण शर्मा
6. वास्तु दोष, वास्तु उपाय, गृह चयन एवं भवन रचना की विस्तृत हिंदी पुस्तक।
सहायक साधन (Practical Tools):
Kundli Software (जैसे Jagannath Hora)–वास्तु के लिए कुंडली विश्लेषण हेतु।
Compass & Vastu Purusha Mandala Charts – दिशा निर्धारण एवं वास्तु योजना हेतु।

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks
Internal Class Test – 10 Marks
Attendance/Behavior – 05 Marks

M.A. - Jyotish

SEMESTER-I

M.A. JYOTISH	Year: M. A. 1st Year	Semester: Ist
Pedagogy:		
Course Code: MAJY104B	Course/Paper Title: **प्रश्न कुण्डली**	

Course Objective & Outcomes:

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

CO1 : छात्र प्रश्न ज्योतिष के मूलभूत सिद्धांतों, विधियों और जन्म कुण्डली से इसके अंतर को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र प्रश्न लग्न की पहचान और भाव–विश्लेषण द्वारा प्रश्न समाधान की प्रक्रिया सीख सकेंगे।

CO3 : छात्र ग्रहों की स्थिति और शक्ति के आधार पर प्रश्न कुण्डली से उचित निर्णय निकालना सीख सकेंगे।

CO4 : छात्र विभिन्न जीवन क्षेत्रों से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण कर सटीक भविष्यवाणी करने में सक्षम होंगे।

CO5 : छात्र व्यावहारिक रूप से प्रश्न कुण्डली का निर्माण और उत्तर देने की योग्यता प्राप्त करेंगे तथा इसके नैतिक पक्षों को समझ सकेंगे।

Credit (L+T+P): 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**प्रश्न ज्योतिष का परिचय** • प्रश्न ज्योतिष की परिभाषा और महत्व • प्रश्न और जन्म कुण्डली में अंतर • प्रश्न पूछने की शुद्ध विधि और मानसिक अवस्था का प्रभाव • प्रश्न कुण्डली निर्माण के लिए आवश्यक तत्त्व (समय, स्थान, लग्न आदि)	9
II	**प्रश्न लग्न और भावों की भूमिका** • प्रश्न लग्न की गणना और उसका महत्व • प्रश्न लग्न में ग्रहों की स्थिति का अर्थ • 12 भावों का प्रश्न विश्लेषण में विशेष योगदान • विशेष भावों से संबंधित प्रश्नों की पहचान (जैसे विवाह, रोग, गुमशुदगी आदि)	9
III	**प्रश्न कुण्डली में ग्रहों का व्यवहार** • ग्रहों की दृष्टि और बल • शुभ–अशुभ ग्रहों का फल • चेष्टाबल, वक्री स्थिति और अस्त ग्रह • ग्रहों के योग और राजयोग का प्रश्न ज्योतिष में महत्व	9
IV	**विशेष प्रकार के प्रश्न और उनके निर्णय** • खोई हुई वस्तु/व्यक्ति का पता लगाना • रोग एवं उपचार संबंधित प्रश्न • विवाह, संतान, रोजगार, यात्रा आदि से जुड़े प्रश्नों का विश्लेषण • तत्कालीन घटनाओं की भविष्यवाणी	9
V	**प्रश्न कुण्डली की व्यावहारिक प्रस्तुति**	9

	• प्रश्न कुण्डली बनाना दृ सॉफ्टवेयर एवं मैन्युअल विधि • उत्तर निर्धारण की प्रक्रिया दृ चरणबद्ध विश्लेषण • सही उत्तर हेतु योग्यता, संयम और अभ्यास की भूमिका • प्रश्न कुण्डली की सीमाएँ और उत्तरदायित्व	

Suggested Readings:

प्रश्न कुण्डली

प्रश्नमार्ग – केरल के नीलकंठ

1. प्रश्न ज्योतिष का सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ, जिसमें प्रश्न की कुंडली से उत्तर देने की विधि अत्यंत गहन रूप में दी गई है।

भविष्यदीपिका – गणेश दैवज्ञ

2. प्रश्नों के माध्यम से भविष्यवाणी करने की शास्त्रीय विधियाँ एवं लक्षणों का विश्लेषण।

प्रश्नतंत्र – वराहमिहिर

3. प्राचीन प्रश्न विधियों और योगों का सारगर्भित ग्रंथ।

सारावली – कालयाण वर्मा

4. फलित ज्योतिष का व्यापक ग्रंथ जिसमें प्रश्न विचार का भी समावेश है।

आधुनिक पुस्तकें (हिंदी/अंग्रेज़ी में)

Prashna Tantra (with English commentary) – B-V- Raman

1. प्राचीन प्रश्न तंत्र का आधुनिक व्याख्या के साथ प्रस्तुतिकरण।

Horary Astrology – S-P- Khullar

2. प्रश्न कुंडली के आधार पर उत्तर देने की आधुनिक पद्धतियाँ।

KP Horary Astrology (Krishnamurti Paddhati) – K- S- Krishnamurti

3. केवल प्रश्नांक के आधार पर सटीक भविष्यवाणी करने की सरल एवं तेज़ विधि।

Prashna Jyotish – Dr- Bhojraj Dwivedi

4. प्रश्न पूछते समय की ग्रह स्थिति और उनके आधार पर संभावनाओं का आकलन।

Horary Astrology – The Astrologer's Guide – William Lilly (Western Classical Teut)

5. पाश्चात्य प्रश्न ज्योतिष का क्लासिक ग्रंथ जो विधियों को स्पष्ट रूप से समझाता है।

ज्योतिष प्रश्न विद्या – पं. सत्यनारायण शर्मा

6. हिंदी में सरल भाषा में प्रश्न कुंडली के प्रकार, योग, विशेष नियम और उदाहरण।

अन्य सहायक साधन–

कृष्णमूर्ति प्रश्न कुंडली सॉफ्टवेयर (KP Horary Software)

Laghu Prashna Mandal – निर्णय में सहायक छोटे चार्ट

ग्रह स्थिति तालिका (Ephemeris) और पंचांग

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

M.A. - Jyotish

SEMESTER-I

M.A. JYOTISH	Year: M. A. 1st Year	Semester: Ist
Pedagogy:		
Course Code: MAJY104C	Course/Paper Title: **हस्तरेखा**	

Course Objective & Outcomes:

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

CO1 : छात्र हस्तरेखा विज्ञान की मूलभूत अवधारणाओं, उद्देश्य और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र हथेली की संरचना और पर्वतों के माध्यम से व्यक्तित्व और संभावनाओं का विश्लेषण करना सीख सकेंगे।

CO3 : छात्र हथेली की प्रमुख रेखाओं का गहराई से विश्लेषण कर व्यक्ति के स्वास्थ्य, करियर और संबंधों की दिशा को जान सकेंगे।

CO4 : छात्र हथेली पर स्थित विशेष चिह्नों और सूक्ष्म रेखाओं से गूढ़ विश्लेषण करना सीखेंगे।

CO5 : छात्र हस्तरेखा विश्लेषण की व्यावहारिक विधियों, नैतिक मूल्यों और सीमाओं को समझ सकेंगे।

Credit (L+T+P): 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**हस्तरेखा विज्ञान का परिचय** • हस्तरेखा विज्ञान की परिभाषा, उद्देश्य एवं महत्व • हस्तरेखा और मनोविज्ञान का संबंध • हस्तरेखा विज्ञान का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य • दाएं और बाएं हाथ की भूमिका एवं उपयोग	9
II	**हथेली की संरचना और पर्वत** • हथेली का वर्गीकरण दृ उंगलियाँ, अंगूठा, हथेली का आकार • सप्त पर्वतरू सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, मंगल, शनि • पर्वतों की ऊँचाई और स्थिति का अर्थ • पर्वतों का व्यक्ति के स्वभाव और भविष्य से संबंध	9
III	**प्रमुख रेखाएँ और उनका विश्लेषण** • जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा, हृदय रेखा • भाग्य रेखा, सूर्य रेखा, विवाह रेखा • रेखाओं की लंबाई, गहराई, द्वैधता, टूटी हुई स्थिति • रेखाओं का कालचक्र और घटनाओं से मेल	9
IV	**सूक्ष्म रेखाएँ और चिह्न** • रेखाओं पर उपस्थित चिह्नरू द्वीप, त्रिशूल, तारे, क्रॉस आदि • विवाह, संतान, शिक्षा, संपत्ति से जुड़ी सूक्ष्म रेखाएँ • शुभ और अशुभ चिह्नों का फल • विशेष योगरू राजयोग, संघर्ष योग, अध्यात्म योग	9
V	**हस्तरेखा का व्यावहारिक उपयोग और नैतिकता**	9

	• हस्तरेखा का सामाजिक और व्यावसायिक उपयोग • व्याख्या में सावधानी और उत्तरदायित्व • परामर्श की मर्यादा और गोपनीयता • हस्तरेखा और भविष्यवाणी की सीमाएँ	

Suggested Readings:

हस्तरेखा

प्राचीन एवं शास्त्रीय ग्रंथ/परंपरागत आधार

हस्त संहिता – नारद

1. हस्तरेखा के शास्त्रीय संदर्भ में रेखाओं, पर्वों एवं चिह्नों का वर्णन।

समुद्र शास्त्र (समुद्रिक शास्त्र) – महर्षि समुद्र

2. शरीर और हस्त के लक्षणों की व्याख्या जिसमें हस्तरेखा शास्त्र की मूलभूत अवधारणाएँ हैं।

लक्षण शास्त्र दृ जातक पारिजात एवं बृहत् संहिता में वर्णित अंश

3. हस्तरेखा एवं अंग लक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व और भविष्य का विवरण।

आधुनिक हिंदी ग्रंथ

हस्तरेखा विज्ञान – पं. रामकृष्ण शास्त्री

4. सरल हिंदी में रेखाओं, पर्वों, चिह्नों और उनके व्यावहारिक उदाहरणों का विस्तृत विवरण।

हस्तरेखा शास्त्र – पं. रमाकान्त मिश्र

5. मूल रेखाएँ, सहायक रेखाएँ, ग्रह पर्व, हस्त चिन्ह, एवं उनके प्रभाव।

समुद्रिक शास्त्र और हस्त रेखाएँ – पं. श्रीनारायण शर्मा

6. आधुनिक जीवन में हस्तरेखा के उपयोग और प्रयोगों पर केंद्रित।

हस्तरेखा एवं ज्योतिष का सम्बन्ध – डॉ. भोजराज द्विवेदी

7. हस्तरेखा का ज्योतिषीय दृष्टिकोण से विश्लेषण, जैसे जन्मकुंडली और हस्तरेखा की संगति।

आधुनिक अंग्रेज़ी पुस्तकें (For Comparative Study)

The Laws of Scientific Hand Reading – William G- Benham

Western palmistry का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ, जिसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हस्तरेखाएँ समझाई गई हैं।

Cheiro's Palmistry for All – Cheiro (Count Louis Hamon)

विश्वप्रसिद्ध हस्तरेखा विशेषज्ञ की पुस्तक जिसमें सरल और प्रभावी विश्लेषण है।

Your Hand – An IndeÛ to Your Life – V- K- Mehrotra

भारतीय संदर्भ में हस्तरेखा का मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारिक विश्लेषण।

अन्य सहायक संसाधन–

हस्तरेखा चार्ट्स – अध्ययन एवं अभ्यास हेतु।

डिजिटल Palmistry Apps/ Software – अभ्यास हेतु प्रयोगात्मक उपकरण।

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

M.A. - Jyotish

SEMESTER-I

M.A. JYOTISH	Year: M. A. 1st Year	Semester: Ist
Pedagogy:		
Course Code: MAJY105	Course/Paper Title: **(Inter Disciplinary Skill) विवाह, मेलापक**	

Course Objective & Outcomes:

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

CO1 : छात्र विवाह संबंधी ज्योतिषीय सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करेंगे एवं वैवाहिक जीवन में ज्योतिष की भूमिका को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र जन्म कुण्डली के माध्यम से विवाह योग, विलंब योग एवं वैवाहिक समस्याओं के कारण पहचान सकेंगे।

CO3 : छात्र अष्टकूट प्रणाली द्वारा कुंडली मेल का अभ्यास कर सकेंगे तथा गुण मिलान का मूल्यांकन कर सकेंगे।

CO4 : छात्र विवाह में आने वाले दोषों की पहचान और उनके परिहार की विधियों को समझ सकेंगे।

CO5 : छात्र व्यावहारिक रूप से कुंडली मेल कर सकेंगे तथा विवाह निर्णय में ज्योतिषीय विवेचन के नैतिक पक्षों को समझ सकेंगे।

Credit (L+T+P): 2+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :
Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+0	

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**वैवाहिक जीवन में ज्योतिष का महत्व** • विवाह विषयक ज्योतिष की भूमिका • वैदिक परंपरा में विवाह की धारणा • विवाह की आयु, समय एवं संयोग निर्धारण • विवाहित जीवन के योग और उसके संकेत	6
II	**जन्म कुण्डली में विवाह संकेतक** • सप्तम भाव और उसके कारक ग्रह • शुक्र एवं गुरु ग्रह का विवाहित जीवन पर प्रभाव • विवाह योग एवं विलंब/विघ्न योग • स्त्री व पुरुष की कुंडलियों में विवाह के विशेष ग्रह योग	6
III	**गुण मिलान की प्रणाली (अष्टकूट मिलान)** • अष्टकूट प्रणालीरू वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, गण, भकूट, नाड़ी • प्रत्येक कूट का महत्व और अंक • कुल 36 गुणों की गणना • न्यूनतम गुण आवश्यकताएँ और उनका व्यावहारिक निर्णय	6
IV	**दोष विचार एवं परिहार** • मंगलीक दोष कारण, प्रभाव और शांति उपाय • नाड़ी दोष, भकूट दोष आदि	6

	• दोषों के शांति विधान और व्यावहारिक उपाय • विशेष स्थितियों में दोषों की निरस्तता	
V	**व्यावहारिक कुंडली मेल और विवेचन** • यथार्थ उदाहरणों द्वारा कुंडली मेल • मेलापक के आधार पर विवाह निर्णय में सहायक कारक • विवाह परामर्श में गोपनीयता और नैतिकता • समकालीन सामाजिक संदर्भों में ज्योतिष का दृष्टिकोण	6

Suggested Readings:

प्राचीन एवं शास्त्रीय ग्रंथ

बृहत् पाराशर होरा शास्त्र – महर्षि पाराशर
विवाह योग, सप्तम भाव विचार, वैवाहिक जीवन की संभावनाओं पर शास्त्रीय विवेचन।
जातक पारिजात – वद्यनाथ
सप्तम भाव, ग्रहों की दृष्टियाँ, एवं विवाह काल निर्धारण पर आधारित सामग्री।
फलकथामृतम् – श्रीराम दयालु
जातक जीवन के विवाह पक्ष पर आधारित गहन विवरण।
कल्याणवर्मा की सारावली
भाव विचार, दशा प्रणाली, और वैवाहिक सफलता/विफलता के संकेत।

आधुनिक हिंदी ग्रंथ

कुंडली मिलान और विवाह निर्णय – डॉ. भोजराज द्विवेदी
गुण मिलान, दोष विचार, उपाय एवं व्यवहारिक दृष्टिकोण सहित।
विवाह निर्णय में कुंडली मिलान – पं. गोविन्द शास्त्री
अष्टकूट मिलान, मंगल दोष, नाड़ी दोष आदि का विस्तृत विवरण।
विवाह योग और मुहूर्त – डॉ. रमाकांत शास्त्री
विवाह हेतु योग, सही समय एवं ग्रह स्थिति की चर्चा।
गुण मिलान और दोष शमन उपाय – पं. हेमराज शर्मा
विवाहित जीवन की समरसता हेतु ग्रहजनित दोषों का निवारण।
अंग्रेज़ी में उपयोगी पुस्तकें (सहायक अध्ययन हेतु)
Astrology and Marriage Matching – B- V- Raman
गुण मिलान और सप्तम भाव विचार की वैज्ञानिक विवेचना।
Ashtakoota and Marriage Compatibility – V- P- Goel
अष्टकूट मिलान पद्धति और आधुनिक संदर्भ में इसकी उपयोगिता।

सहायक संसाधन–

Matching Software (जैसे Kundli – Parashara's Light)
Online Tools for Ashtakoota Matching
मांगलिक दोष परीक्षण चार्ट्स

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks
Internal Class Test – 10 Marks
Attendance/Behavior – 05 Marks

M.A. - Jyotish

SEMESTER-I

M.A. JYOTISH	Year: M. A. 1st Year	Semester: Ist
Pedagogy:		
Course Code: MAJY106	Course/Paper Title: **(Intra Disciplinary) ज्योतिष के मूलभूत सिद्धांत**	

Course Objective & Outcomes:

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

CO1 : छात्र वैदिक ज्योतिष के स्वरूप, अंगों और उसकी समग्र उपयोगिता को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र पंचांग के तत्त्वों की गणना और उनके महत्व को व्यावहारिक रूप से समझ सकेंगे।

CO3 : छात्र ग्रह, राशि और भावों के संबंध को समझकर ज्योतिषीय विश्लेषण की नींव रख सकेंगे।

CO4 : छात्र कुंडली के प्रकारों की पहचान कर, सरल रूप में उसकी रचना करना सीख सकेंगे।

CO5 : छात्र एक उत्तरदायी ज्योतिष विद्यार्थी के रूप में नैतिकता, मर्यादा और वैज्ञानिक विवेक के साथ ज्योतिष का अध्ययन कर सकेंगे।

Credit (L+T+P): 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**ज्योतिष का परिचय और स्वरूप** • ज्योतिष की परिभाषा, प्रकृति एवं उपयोगिता • ज्योतिष के अंगरू सिद्धांत, संहिता, होरा • वैदिक ज्योतिष बनाम आधुनिक ज्योतिष • कालगणना का महत्व और उसका वैज्ञानिक पक्ष	9
II	**पंचांग और समय निर्धारण के तत्त्व** • तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण की परिभाषा • पंचांग का निर्माण और उसकी भूमिका • सूर्योदय, सूर्यास्त, चंद्रमा की गति • संवत, मास, पक्ष, दिन, मुहूर्त का विवेचन	9
III	**ग्रह, राशि और भाव** • नवग्रहों की स्थिति, स्वभाव एवं प्रभाव • बारह राशियाँ दृ लक्षण, स्वामी ग्रह, गुण और तत्व • बारह भावों का महत्व एवं उनके कारकत्व • ग्रहों की दृष्टि, युति, स्थिति और गोचर का मूलभूत ज्ञान	9
IV	**कुंडली के प्रकार और निर्माण का आधार** • जन्मकुंडली का स्वरूप एवं प्रकाररू उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय • लग्न और चंद्र लग्न की गणना • ग्रहों की स्थिति का चार्ट में अंकन • कुंडली निर्माण की आधारभूत प्रक्रिया	9
V	**ज्योतिषीय नैतिकता एवं सीमाएँ**	9

	• ज्योतिषीय परामर्श में उत्तरदायित्व • जातक के साथ संवाद की मर्यादा • ज्योतिष की सीमाएँ और अंधविश्वास से भेद • वैज्ञानिक आलोचना एवं व्यवहारिक ज्योतिषया	

Suggested Readings:

📖 प्राचीन एवं शास्त्रीय ग्रंथ

बृहत् पाराशर होरा शास्त्र – महर्षि पाराशर

👉 वैदिक ज्योतिष का आधारभूत ग्रंथ; ग्रह, भाव, राशि, दृष्टि, दशा इत्यादि का शास्त्रीय विवेचन।

जातक पारिजात – वद्यनाथ

👉 भाव विचार, ग्रहों के फल एवं विभिन्न योगों का वर्णन।

फलकथामृतम् – श्री राम दयालु

👉 कुंडली विश्लेषण की प्रक्रिया, ग्रह–भाव–राशि संबंध का विस्तार।

सारावली – कल्याण वर्मा

👉 नवग्रह विचार, ग्रहों की स्थितियों के आधार पर फलादेश।

बृहत् जातक – वराहमिहिर

👉 ग्रहों के भौमिकी और भावों पर प्रभाव की व्यापक चर्चा।

📚 आधुनिक हिंदी पुस्तकें

वैदिक ज्योतिष के मूल सिद्धांत – डॉ. भोजराज द्विवेदी

👉 सरल भाषा में ग्रह, भाव, राशियों और दशाओं का परिचय।

ज्योतिष प्रवेशिका – पं. रामानुज त्रिपाठी

👉 प्रारंभिक छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी पुस्तक जिसमें मूलभूत तत्वों की व्याख्या है।

ज्योतिष का विज्ञान और गणित – पं. रामस्वरूप शर्मा

👉 ज्योतिषीय गणना एवं सिद्धांतों का संतुलन।

ग्रह, भाव और फल – पं. हरिओम वर्मा

👉 भावों और ग्रहों के मध्य संबंध तथा व्यवहारिक फलित विचार।

📚 अंग्रेज़ी पुस्तकें (Comparative Study हेतु)

Astrology for Beginners – B- V- Raman

👉 वैदिक ज्योतिष का सरल परिचय अंग्रेज़ी पाठकों के लिए।

Fundamentals of Astrology – Dr- K- S- Charak

👉 भाव, ग्रह, दशा, दृष्टि प्रणाली का वैज्ञानिक और चिकित्सीय दृष्टिकोण।

Light on Life – Hart de Fouw & Robert Svoboda

👉 आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वैदिक ज्योतिष के सिद्धांतों की विवेचना।

📁 **सहायक संसाधन–**

Kundli Software ¼Jagannatha Hora] Parashara' स्पहीज)

Ephemeris (ग्रह स्थिति तालिका)

Panchang / गोचर गणना सामग्री

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-II

Programme: M.A. (JYOTISH)	Year: M. A. 1st Year	Semester: IInd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY201**	Course/Paper Title: **सैद्धान्तिक ज्योर्तिविज्ञान**	

Course Outcomes:

This paper aims to provide the students the conceptual knowledge of

CO1 : छात्र ज्योर्तिविज्ञान के वैदिक एवं दार्शनिक मूल स्रोतों को समझ सकेंगे और उसकी व्यापक दृष्टि को ग्रहण कर सकेंगे।

CO2 : छात्र खगोलीय तत्वों की वैज्ञानिक तथा ज्योतिषीय व्याख्या कर सकेंगे और समय निर्धारण की मूलभूत गणनाओं को समझ सकेंगे।

CO3 : छात्र भाव, राशि एवं ग्रहों की अन्तःक्रिया और उनके सैद्धान्तिक प्रभावों का विश्लेषण कर सकेंगे।

CO4 : छात्र विभिन्न ग्रह–योगों, दृष्टियों और युतियों की सिद्धान्तपरक समझ विकसित कर सकेंगे और उनका उचित विश्लेषण कर सकेंगे।

CO5 : छात्र सैद्धान्तिक ज्योर्तिविज्ञान के व्यावहारिक पक्षों को समझ सकेंगे और उसका समुचित उपयोग सामाजिक परामर्श के क्षेत्र में कर सकेंगे।

Credit: 2+0+2	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+60

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**ज्योर्तिविज्ञान का दार्शनिक और वैदिक आधार** • ज्योर्तिविज्ञान की परिभाषा, उद्देश्य और इतिहास • वेदों एवं वेदाङ्गों में ज्योर्तिविज्ञान का स्थान • कालचक्र की अवधारणा और ब्रह्मांड की समय–रचना • काल, दिशा और कर्म के सिद्धांत	6
II	**खगोलीय अवधारणाएँ और गणनात्मक सिद्धांत** • ग्रह, नक्षत्र, राशियाँ और उनकी गति • सौरमंडल की संरचना और ज्योतिष में उसका उपयोग • ग्रह–गति की अवधारणाएँरू अपसौर, उपसौर, युति, वक्रीत्व • चंद्र–सौर कालगणना, अयनांश और पंचांग संबंधी सिद्धांत	6
III	**भाव, राशि एवं ग्रहों की सैद्धान्तिक भूमिका** • भावों की तत्वमीमांसारू जन्म से संबंधित कर्मक्षेत्र • राशियों का स्वभावरू अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल तत्व • नवग्रहों की सैद्धान्तिक स्थिति, स्वामित्व एवं प्रभाव • ग्रहों के शुभ–अशुभ परिणाम के सिद्धांत	6
IV	**योग, दृष्टि एवं युति के सैद्धान्तिक नियम** • ग्रह दृष्टियाँरू सामान्य एवं विशेष दृष्टियाँ • योग निर्माण की शर्तें और उनके प्रभाव • शुभ–अशुभ योगों की तत्वमीमांसा	6

	• युति, स्थिति एवं दृष्टि का समन्वयात्मक अध्ययन	
V	**सैद्धान्तिक ज्योतिर्विज्ञान की व्यावहारिक दिशा** • जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सैद्धान्तिक ज्ञान की भूमिका • व्याख्या में शुद्धि, नैतिकता एवं विवेक • सिद्धान्त एवं फलित ज्योतिष में अंतर और सामंजस्य • भविष्यवाणी के शास्त्रीय एवं आधुनिक सीमांकन	6

Suggested Readings:

📖 **प्राचीन एवं शास्त्रीय ग्रंथ**

बृहत् पाराशर होरा शास्त्र – महर्षि पाराशर

☞ सैद्धान्तिक ज्योतिष का मूल ग्रंथ, दशा प्रणाली (विंशोत्तरी), ग्रह स्वभाव, दृष्टियाँ, योग और भाव विचार का गहन विवेचन।

जातक पारिजात – वद्यनाथ

☞ भावाध्याय, ग्रहों का स्वरूप, पंचवर्गीय बल, दृष्टि सिद्धांत, योग विचार।

सारावली – कल्याण वर्मा

☞ भाव, ग्रह, दृष्टियाँ, योग और दशा के सैद्धान्तिक नियमों का विश्लेषण।

फलकथामृतम् – राम दयालु

☞ विविध दशाएं, ग्रहों के फल, भाव एवं नक्षत्रों के सिद्धांतात्मक विचार।

बृहत जातक – वराहमिहिर

☞ फलित सिद्धांत, ग्रहों के स्थान परिवर्तन के सिद्धांत, ग्रह स्थिति अनुसार फल।

📚 आधुनिक हिंदी पुस्तकें

सैद्धान्तिक ज्योतिष – डॉ. भोजराज द्विवेदी

☞ आधुनिक संदर्भ में शास्त्रीय सिद्धांतों की व्याख्या, विशेषकर दशा, योग, भाव सिद्धांत।

वैदिक ज्योतिष सिद्धांत – पं. रामस्वरूप शास्त्री

☞ ग्रहों की गति, गोचर प्रभाव, दशा फल, दृष्टि प्रणाली आदि का विस्तृत वर्णन।

ज्योतिष सिद्धांत भाग 1 एवं 2 – पं. हरिओम वर्मा

☞ भाव विचार, ग्रह–राशि के सैद्धान्तिक संयोजन पर केंद्रित।

📚 अंग्रेज़ी पुस्तकें (समझ के विस्तार हेतु)

Fundamentals of Astrology – Dr- K- S- Charak

☞ वैदिक सिद्धांतों की वैज्ञानिक प्रस्तुति, भाव, ग्रह, दशा, दृष्टि इत्यादि।

TeÛtbook of Scientific Hindu Astrology – P- S- Sastri

☞ शुद्ध शास्त्रीय ग्रंथों के सिद्धांतों को आधुनिक शब्दावली में प्रस्तुत करता है।

Astrology for Beginners – B- V- Raman

☞ ज्योतिष के मूल सिद्धांतों की अंग्रेज़ी में व्यावहारिक प्रस्तुति।

📁 **अन्य सहायक सामग्री**

गोचर तालिका (Transit Tables)

Ephemeris (ग्रह स्थिति तालिकाएँ)

Dasha Calculator Tools (Jagannatha Hora] Kundli Software)

Astrological Journals / शोध–पत्रिकाएँ (जैसे -Jyotish Manthan) (Astrological Magazine)

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-II

Programme: M.A. (JYOTISH)	**Year: M. A. 1st Year**	**Semester: IInd**
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY202**	Course/Paper Title: **वैदिक गणित**	

Course Outcomes:

This paper aims to provide the students the conceptual knowledge of

CO1 : छात्र वैदिक गणित की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, मूल सूत्रों और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र वैदिक सूत्रों की सहायता से अंकगणना को सरलता और तीव्रता से हल करना सीखेंगे।

CO3 : छात्र बीजगणितीय समस्याओं को वैदिक सूत्रों की सहायता से त्वरित एवं सटीक रूप से हल कर सकेंगे।

CO4 : छात्र विभाजन और भाजकता संबंधित समस्याओं को वैदिक पद्धति से शीघ्रता से हल कर सकेंगे।

CO5 : छात्र वैदिक गणित को दैनिक जीवन एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में व्यवहारिक रूप से लागू करना सीख सकेंगे।

Credit: 2+0+2	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+60

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**वैदिक गणित का परिचय एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** • वैदिक गणित की परिभाषा और स्वरूप • वैदिक गणित के 16 सूत्र और 13 उपसूत्रों का संक्षिप्त परिचय • वैदिक गणित और आधुनिक गणित में अंतर • श्री भारती कृष्ण तीर्थ और उनका योगदान	6
II	**संख्यात्मक गणना में वैदिक सूत्रों का प्रयोग** • एकाधिकेन पूर्वेणष्, ''निखिलं नवतः चरमं दशतःष सूत्रों का प्रयोग • बड़ी संख्याओं के गुणा, भाग, वर्ग एवं वर्गमूल की विधियाँ • मानसिक गणना के कौशल में वृद्धि • अंकगणितीय समस्याओं का तीव्र समाधान	6
III	**समीकरणों एवं बीजगणितीय संक्रियाओं में वैदिक पद्धति** • द्विघात एवं घातांक समीकरणों का सरल हल • चाल, दूरी, समय आदि समस्याओं का समाधान • ''पारावर्त्य योजयेत्ष, ''शून्यं साम्यसमुच्चये'' सूत्रों का प्रयोग • अनुपात, समांतर श्रेणी, वर्ग–समीकरण	6
IV	**विभाजन, भाजकता और शेषफल की वैदिक विधियाँ** • सरल विभाजन की वैदिक पद्धतियाँ • किसी संख्या से विभाज्यता की जांच	6

	• शेषफल निकालने की वैदिक तरकीबें • प्राथमिक और यौगिक संख्याओं की पहचान	
V	**वैदिक गणित का व्यावहारिक उपयोग और प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में महत्त्व** • प्रतियोगी परीक्षाओं में वैदिक गणित की उपयोगिता • वैदिक गणना द्वारा समय की बचत • बच्चों को गणित में रुचि दिलाने में वैदिक गणित का योगदान • तकनीकी, वाणिज्यिक एवं बैंकिंग क्षेत्रों में प्रयोग	6

Suggested Readings:

📖 प्राचीन एवं वैदिक स्रोत
वेदों में गणित – वैदिक सूक्तों में छिपे गणितीय संकेतों का विवेचन।
वेदांग ज्योतिष – लघु एवं महा ज्योतिष ग्रंथों में गणना–पद्धतियों की प्रस्तुति।
शुल्ब सूत्र – बौधायन, आपस्तम्ब, कात्यायन
☞ प्राचीन ज्यामिति, रेखा गणित और यज्ञ वेदी की गणनाएँ।

📚 आधुनिक हिंदी ग्रंथ
वैदिक गणित – पं. श्री भारती कृष्ण तीर्थ
☞ मूल और सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ, जिसमें 16 सूत्र और 13 उपसूत्रों का विवेचन है।
वैदिक गणित सरल रूप में – डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा
☞ स्कूल व कॉलेज स्तर के छात्रों हेतु उपयुक्त एवं आसान विधियाँ।
वैदिक गणित द्वारा मानसिक गणना – पं. मनोज शर्मा
☞ तेज गणना हेतु वैदिक गणितीय ट्रिक्स और उपाय।
वैदिक गणित (कक्षा 6–12 स्तर) – एनसीईआरटी आधारित सहायक पुस्तकें
☞ वैदिक गणित को आधुनिक पाठ्यक्रम से जोड़ने के दृष्टिकोण से उपयुक्त।

📚 अंग्रेज़ी पुस्तकें
Vedic Mathematics – Swami Bharati Krishna Tirtha
☞ मूल अंग्रेज़ी ग्रंथ, जिसमें सभी सूत्रों की गहन व्याख्या उपलब्ध है।
The Power of Vedic Maths & Atul Gupta
☞ competitive म•ंउे हेतु fast calculations और जतपबो।
Vedic Mathematics for All Ages & Vandana Singhal
☞ **छात्रों और अध्यापकों दोनों के लिए उपयोगी।**
🧮 मुख्य विषयों को कवर करने वाली विधियाँ
जोड़, घटाव, गुणा, भाग की तीव्र विधियाँ
वर्गमूल और घनमूल निकालना
समीकरणों का हल
अंश (fractions) प्रतिशत (percentages) अनुपात (ratios)
ज्यामिति, त्रिकोणमिति के वैदिक दृष्टिकोण

💼 सहायक संसाधन
YouTube Channels: Vedic Maths India] Maths Trick by Gaurav Sir
Software & Apps: Vedic Maths Tricks] Speed Math

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks
Internal Class Test – 10 Marks
Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-II

Programme: M.A. (JYOTISH)	Year: M. A. 1st Year	Semester: IInd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY203**	Course/Paper Title: मूहूर्त ज्योतिष	

Course Outcomes:
This paper aims to provide the students the conceptual knowledge of

CO1 : छात्र मूहूर्त ज्योतिष की मूल अवधारणा, महत्व और पंचांग के अंगों की भूमिका को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र वार, तिथि, नक्षत्र, योग, करण के गुण–दोष को पहचानकर उचित मूहूर्त का चयन करना सीखेंगे।

CO3 : छात्र विभिन्न सामाजिक, धार्मिक एवं व्यक्तिगत कार्यों हेतु उपयुक्त मूहूर्त का चयन कर सकेंगे।

CO4 : छात्र शुभ लग्नों एवं चंद्रमा की स्थिति का मूहूर्त निर्धारण में महत्त्व समझ सकेंगे तथा अशुभ समय से बचने की विधियाँ जान सकेंगे।

CO5 : छात्र मूहूर्त का व्यावहारिक रूप से उपयोग कर सकेंगे एवं ज्योतिषीय परामर्श में नैतिकता और विवेक का पालन कर सकेंगे।

Credit: 2+0+2	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+60

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**मूहूर्त का सिद्धान्त और महत्व** • मूहूर्त की परिभाषा एवं आवश्यकता • शुभाशुभ समय का निर्धारण क्यों आवश्यक है • वैदिक ग्रंथों में मूहूर्त की अवधारणा • पंचांग के पाँच अंगों का मूहूर्त में उपयोग (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण)	6
II	**दिन, नक्षत्र, योग व करण का शुभाशुभ विचार** • वार एवं तिथि का कार्यों में उपयोग • नक्षत्रों की प्रकृति (स्थिर, चर, क्रूर आदि) • योगों के प्रभाव एवं कार्यानुकूल चयन • करणों की विशेषताएँ एवं शुभ कार्यों में उपयोग	6
III	**कार्य विशेष के लिए मूहूर्त निर्धारण** • विवाह, गृह प्रवेश, वाहन क्रय, नामकरण, उपनयन आदि के मूहूर्त • व्यापार आरंभ, यंत्र स्थापना, दवा सेवन आदि के लिए शुभ समय • यात्रा, संतानोत्पत्ति, वास्तु पूजन हेतु मूहूर्त विचार • वर्ज्य तिथियाँ, अमावस्या, ग्रहण आदि में निषेध कार्य	6
IV	**लग्न विचार एवं चंद्रमा का महत्व** • लग्न का चुनावरू चर, स्थिर, द्विस्वभाव लग्न • चंद्रमा की स्थिति का कार्य में प्रभाव • तारा बल, चंद्रबल, ग्रहबल का मूहूर्त में विचार • राहुकाल, यमघण्टक, गुलिककाल की गणना व परिहार	6

V	**मूहूर्त का व्यावहारिक अनुप्रयोग एवं नैतिक दृष्टिकोण** • पंचांग से मूहूर्त निकालने का अभ्यास • लोकजीवन में मूहूर्त का महत्व • मूहूर्त निर्धारण में परामर्श की मर्यादा • वैज्ञानिक आलोचना एवं आधुनिक समाज में मूहूर्त का स्थान	6

Suggested Readings:

📖 प्राचीन एवं शास्त्रीय ग्रंथ

बृहत् पाराशर होरा शास्त्र – महर्षि पाराशर

☞ मूहूर्त के निर्धारण, पंचांग, तिथि, वार, योग, करण आदि के संबंध में शास्त्रीय जानकारी।

वेदांग ज्योतिष – महर्षि वेदव्यास

☞ वैदिक ज्योतिष में समय निर्धारण, मूहूर्त एवं धार्मिक अनुष्ठानों के लिए निर्धारित समय।

चंद्रकाल देशकाल और मूहूर्त – वराहमिहिर

☞ चंद्रमा और ग्रहों की स्थिति से मूहूर्त निर्धारण।

पंचांग प्रवीण – पं. हरि नारायण शर्मा

☞ पंचांग के विभिन्न तत्वों का विश्लेषण, मूहूर्त तय करने के उपाय।

📚 आधुनिक हिंदी ग्रंथ

मूहूर्त और पुण्यकाल–डॉ. भोजराज द्विवेदी

☞ मूहूर्त शास्त्र, पंचांग, योग, करण, तिथि और वार की गहन व्याख्या।

मूहूर्त ज्योतिष – पं. रामस्वरूप शर्मा

☞ विशेष अनुष्ठानों के लिए शुभ समय का निर्धारण एवं मूहूर्त के प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित पुस्तक।

मूहूर्त शास्त्र – पं. हरिओम वर्मा

☞ विवाह, गृह प्रवेश, यात्रा, यज्ञ, हवन आदि कार्यों के लिए सही मूहूर्त का निर्धारण।

ज्योतिष में मूहूर्त निर्धारण – पं. रवि प्रकाश मिश्र

☞ हर प्रकार के कार्यों के लिए मूहूर्त का निर्णय करने की प्रक्रिया एवं उपयुक्त सिद्धांतों की व्याख्या।

📚 अंग्रेज़ी पुस्तकें (अधिक सटीक संदर्भ के लिए)

Electional Astrology: A Guide to the Astrology of Timing – Charles E-O- Carter

☞ मूहूर्त और चुनाव ज्योतिष पर विस्तृत मार्गदर्शन, खासतौर पर कर्मों के शुभ और अशुभ समय का निर्धारण।

Timing of Events: A Guide to Electional Astrology – Geoffrey Cornelius

☞ ज्योतिष में मूहूर्त का निर्धारण और घटनाओं के लिए उपयुक्त समय का चयन।

Vedic Astrology: A Guide to the Fundamentals of Jyotish – Ronnie Gale Dreyer

☞ वैदिक ज्योतिष में समय निर्धारण, मूहूर्त और पंचांग के उपयोग की विशेष जानकारी।

🧭 सहायक संसाधन

पंचांग (Panchang) सॉफ़्टवेयर और ऑनलाइन टूल्स

मूहूर्त निर्धारण ऐप्स–

Panchang by Drik Panchang

Kundli Software (Jagannatha Hora)

YouTube Channels:

Vedic Astrology & Muhurat

Astrology Channel (पंचांग आधारित मुहूर्त निर्धारण)

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-II

Programme: M.A. (JYOTISH)	**Year: M. A. 1st Year**	**Semester: IInd**
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY204A**	Course/Paper Title: **प्रौढ वास्तु विज्ञान**	

Course Outcomes:

This paper aims to provide the students the conceptual knowledge of

CO1 : छात्र वास्तु शास्त्र की मूल अवधारणाओं, ऐतिहासिक आधारों एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र दिशाओं के ज्योतिषीय एवं वास्तुशास्त्रीय महत्व को समझकर भवन की दिशा–योजना करना सीखेंगे।

CO3 : छात्र एक आदर्श आवासीय भवन की संरचना वास्तु के अनुसार करने में सक्षम होंगे तथा दोषों की पहचान कर समाधान प्रस्तुत कर सकेंगे।

CO4 : छात्र व्यवसायिक एवं धार्मिक संरचनाओं के वास्तु–सिद्धांतों को समझकर व्यावहारिक उपयोग कर सकेंगे।

CO5 : छात्र आधुनिक जीवन में वास्तु शास्त्र के यथार्थवादी और नैतिक प्रयोग को समझ सकेंगे और वैज्ञानिक सोच के साथ वास्तु परामर्श दे सकेंगे।

Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**वास्तु विज्ञान का परिचय एवं विकास** • वास्तु की परिभाषा, उद्देश्य और ऐतिहासिक विकास • वेदों, पुराणों, शिल्पशास्त्रों में वास्तु का उल्लेख • वास्तु पुरुष मंडल का स्वरूप और महत्व • पंचमहाभूत एवं वास्तु के सिद्धांत	9
II	**दिशाएँ एवं उनका वास्तु में प्रभाव** • आठों दिशाओं का महत्व और उनके स्वामी ग्रह • प्रत्येक दिशा के लिए उपयुक्त गतिविधियाँ • दोषयुक्त दिशा–निर्धारण के दुष्परिणाम • दिशा परीक्षण की वैदिक विधियाँ	9
III	**आवासीय भवनों का वास्तु नियोजन** • मुख्य द्वार, रसोईघर, शयनकक्ष, पूजा कक्ष, शौचालय आदि का स्थान • भूमिपरीक्षा, भूमि चयन एवं परिशोधन • जल स्रोत (कुँआ, बोरिंग, जल टंकी) का नियोजन • वास्तु दोष और उनके समाधान	9
IV	**व्यावसायिक, औद्योगिक एवं धार्मिक स्थलों का वास्तु** • दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री, स्कूल आदि की वास्तु योजना	9

	• धार्मिक स्थानों (मंदिर, पूजा स्थल आदि) का वास्तु • सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण • आर्थिक, मानसिक और स्वास्थ्य संबंधी लाभ की दृष्टि से योजना	
V	**आधुनिक जीवन में वास्तु विज्ञान का प्रयोग और सीमाएँ** • वास्तु में विज्ञान एवं विश्वास का समन्वय • आधुनिक निर्माण तकनीकों के साथ वास्तु का संतुलन • वास्तु परामर्श में नैतिकता • वास्तु का मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रभाव	9

Suggested Readings:

📖 प्राचीन एवं शास्त्रीय ग्रंथ

मयमतम् (Mayamatam) – महर्षि मय

☞ वास्तु शास्त्र का प्राचीनतम ग्रंथ, भवन निर्माण, दिशा सिद्धांत, स्थल चयन आदि की विस्तृत जानकारी।

विश्वकर्मा वास्तु शास्त्र – विश्वकर्मा

☞ गृह, मंदिर, नगर, जल निकास, द्वार, खिड़की, निर्माण सामग्री आदि पर विस्तृत विवरण।

सामरांगण सूत्रधार – राजा भोज

☞ शिल्प, स्थापत्य एवं वास्तु का व्यापक शास्त्रीय विवेचन।

📚 आधुनिक हिंदी ग्रंथ

वास्तु विज्ञान – सिद्धांत और व्यवहार – पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

☞ आधुनिक जीवन में वास्तु सिद्धांतों का व्यवहारिक प्रयोग, ऊर्जा संतुलन और सकारात्मकता।

वास्तु शास्त्र का वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ. रमेश कुमार मिश्र

☞ वास्तु के सिद्धांतों को विज्ञान के साथ जोड़कर प्रस्तुति।

प्राचीन भारत में वास्तु कला – डॉ. अरुण कुमार शर्मा

☞ ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्राचीन स्थापत्य का वर्णन।

वास्तु रहस्य – पं. रमाकांत शास्त्री

☞ वास्तु दोष एवं उनके निवारण की विधियाँ, दिशा, तत्त्व एवं ऊर्जा सिद्धांत।

आधुनिक वास्तु विज्ञान – पं. संजय राठौड़

☞ फ्लैट, ऑफिस, फैक्ट्री, व्यवसायिक परिसर आदि के लिए वास्तु की गाइडलाइन।

📘 अंग्रेज़ी पुस्तकों से पूरक अध्ययन

Vaastu: Breathing Life into Space – Dr- Robert E- Svoboda

☞ ऊर्जा, अंतरिक्ष और वास्तु तत्वों की वैज्ञानिक समझ।

Vastu: Transcendental Home Design in Harmony with Nature – Sherri Silverman

☞ वास्तु और योग–तत्वों के सामंजस्य की आधुनिक प्रस्तुति।

Scientific Vastu – Dr- B- Niranjan Babu

☞ वास्तु के नियमों का वैज्ञानिक विश्लेषण, ज्योतिष से सम्बन्ध।

🧭 सहायक संसाधन

ऑनलाइन कोर्स (उदाहरण– IGNOU] Bhartiya Vidya Bhavan] Vedic Vastu Institutes)

Architectural Journals on Indian Temple@Vastu Design

AutoCAD with Vastu Modules (वास्तु अनुसार डिज़ाइन हेतु उपयोगी)

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-II

Programme: M.A. (JYOTISH)	**Year: M. A. 1st Year**	**Semester: IInd**
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY204B**	Course/Paper Title: **रत्नोंपचार**	

Course Outcomes:
This paper aims to provide the students the conceptual knowledge of

CO1 : छात्र रत्नों के ज्योतिषीय महत्व, इतिहास और उपयोग की मूलभूत समझ प्राप्त करेंगे।
CO2 : छात्र ग्रहों से संबंधित रत्नों की पहचान, गुण और उपयोग के सिद्धांतों को जान सकेंगे।
CO3 : छात्र रत्नों की शुद्धता की पहचान और उचित धारण पद्धति को व्यवहार में लाने में सक्षम होंगे।
CO4 : छात्र रत्नों के चिकित्सीय व मानसिक प्रभावों को समझकर उनका समुचित प्रयोग करना सीखेंगे।
CO5 : छात्र रत्न परामर्श देते समय नैतिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और व्यवहारिक विवेक का पालन करना सीखेंगे।

Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :
Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0	

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**रत्नोपचार का परिचय एवं ज्योतिष में उपयोगिता** • रत्नों की परिभाषा और महत्व • रत्नों का वैदिक एवं पारंपरिक सन्दर्भ • ग्रहों से रत्नों का संबंध • रत्नों के उपयोग से होने वाले प्रभाव	9
II	**नवग्रहों से संबंधित रत्न** • नवग्रहों के प्रतिनिधि रत्न • प्रत्येक ग्रह के रत्न के भौतिक, रासायनिक और ज्योतिषीय गुण • ग्रह–रत्नों के चयन की विधियाँ • वैकल्पिक रत्न और उपरत्न	9
III	**रत्नों की शुद्धता एवं धारण विधियाँ** • असली और नकली रत्नों की पहचान • रत्न की शुद्धि और अभिमंत्रण की प्रक्रिया • रत्न धारण करने की विधियाँ (अंगुली, धातु, दिन, समय) • रत्न धारण से पूर्व आवश्यक सावधानियाँ	9
IV	**रत्नों के चिकित्सीय एवं मानसिक प्रभाव** • रत्नों द्वारा रोगोपचार की परंपरा • मानसिक स्वास्थ्य एवं ऊर्जा संतुलन में रत्नों की भूमिका	9

	• रंग चिकित्सा (कलर थेरेपी) और रत्न • आधुनिक चिकित्सा में रत्नों का स्थान	
V	**रत्न परामर्श की व्यावहारिकता एवं नैतिकता** • जन्मकुंडली के अनुसार रत्न निर्धारण • रत्न सुझाव में सावधानी एवं उत्तरदायित्व • अतिरेक, लालच व अंधविश्वास से बचाव • वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ रत्न परामर्श	9

Suggested Readings:

📖 प्राचीन एवं शास्त्रीय ग्रंथ

रत्नपरीक्षा – वराहमिहिर

☞ रत्नों के लक्षण, पहचान, दोष, रत्न परीक्षण और उनके शुभाशुभ प्रभावों की शास्त्रीय व्याख्या।

बृहत्संहिता (रत्न अध्याय) – वराहमिहिर

☞ रत्नों का वर्गीकरण, ज्योतिष से संबंध, ग्रह–रत्न मेल और उपयोग।

गरुड़ पुराण – रत्न परिच्छेद

☞ रत्नों के धार्मिक और चिकित्सा उपयोग, उनके प्रभावों का वर्णन।

📚 आधुनिक हिंदी ग्रंथ

रत्न और उनका ज्योतिषीय प्रभाव – पं. भोजराज द्विवेदी

☞ रत्नों की उपयोगिता, ग्रहों के अनुसार धारण करने की विधि, लाभ और सावधानियाँ।

रत्नों द्वारा उपचार – पं. हेमंत शास्त्री

☞ ग्रहजन्य दोषों के निवारण हेतु रत्नोपचार की संपूर्ण विधियाँ।

रत्न विज्ञान और उपचार – डॉ. सूर्यनारायण शुक्ल

☞ रत्नों के भौतिक, रासायनिक और ज्योतिषीय पहलुओं का समन्वय।

रत्न परिचय और प्रयोग – पं. श्रीकांत शर्मा

☞ रत्नों की पहचान, उनके परीक्षण और जीवन में उपयोग का सरल मार्गदर्शन।

📘 अंग्रेज़ी पुस्तकों से पूरक अध्ययन

Gem Therapy in Vedic Astrology & Harish Johari

☞ रत्नों की आध्यात्मिक शक्ति, धारण विधि और ज्योतिषीय आधार।

Astrological Gems – B-V- Raman

☞ ग्रह–रत्न संबंध, जन्मपत्रिका के अनुसार रत्नों का चयन एवं प्रभाव।

Gems and Astrology – O-P- Verma

☞ व्यावहारिक दृष्टिकोण से रत्नों का चयन एवं उनके पारलौकिक प्रभाव।

🧭 सहायक संसाधन

रत्न परीक्षण प्रयोगशालाएँ (Gem Testing Labs½ tSls: GII ¼Gemological Institute of India) IGI

Online Tools:

Kundli Software with Gemstone Suggestions

Planet&Gem Match Calculators

YouTube Channels:

Gemstone Astrology by AstroSage/AstroVed आदि

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-II

Programme: M.A. (JYOTISH)	**Year: M. A. 1st Year**	**Semester: IInd**
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY204C**	Course/Paper Title: **वेदांग ज्योतिष**	
Course Outcomes: This paper aims to provide the students the conceptual knowledge of		
CO1 : छात्र वेदों एवं वेदाङ्गों की मूल अवधारणा और वेदाङ्ग ज्योतिष के महत्व को समझ सकेंगे। CO2 : छात्र वेदाङ्ग ज्योतिष के मूल ग्रंथों और काल–गणना के प्राचीन सिद्धांतों को पढ़ने और समझने में सक्षम होंगे। CO3 : छात्र नक्षत्रों एवं प्राचीन कालमापन की विधियों को व्यवहार में समझ सकेंगे। CO4 : छात्र धार्मिक और सामाजिक कर्मों के लिए उचित समय निर्धारण में वेदाङ्ग ज्योतिष के उपयोग को समझ सकेंगे। CO5 : छात्र वेदाङ्ग ज्योतिष के आधुनिक उपयोग, प्रासंगिकता और इसकी वैज्ञानिक समीक्षा करना सीखेंगे।		
Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory	
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :	
Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0		

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**वेद और वेदाङ्गों का परिचय** • वेदों का स्वरूप और संरचना • वेदाङ्गों की परिभाषा एवं सूची • वेदाङ्गों का उद्देश्य और उपयोग • ज्योतिष वेदाङ्ग का स्थान और महत्व	9
II	**वेदाङ्ग ज्योतिष के स्रोत ग्रंथ** • लघु वृहज्ज्यातिष (ऋग्वेदीय व यजुर्वेदीय) का परिचय • वेदाङ्ग ज्योतिष के प्रमुख श्लोक और सूत्र • काल–गणना की विधियाँ (तिथि, नक्षत्र, मास, ऋतु आदि) • ऋषि लगध का योगदान	9
III	**नक्षत्र प्रणाली एवं कालमापन** • 27 नक्षत्रों की सूची और उनका ज्योतिषीय महत्व • सूर्योदय–सूर्यास्त, अहोरात्र, पक्ष, मास, अयन, वर्ष की परिभाषा • तिथि और नक्षत्र निर्धारण की विधि • वेदों में कालमापन की आवश्यकता	9
IV	**यज्ञ और धार्मिक कर्मों में ज्योतिष की भूमिका** • यज्ञीय कर्मों के लिए काल निर्धारण	9

	• व्रत, पर्व एवं अनुष्ठानों हेतु समय विचार • वेदाङ्ग ज्योतिष का सामाजिक और धार्मिक जीवन में प्रयोग • शुभाशुभ समय का चयन	
V	**वेदाङ्ग ज्योतिष का आधुनिक महत्व एवं समीक्षा** • आधुनिक ज्योतिष में वेदाङ्ग ज्योतिष का स्थान • वेदाङ्ग ज्योतिष और खगोल विज्ञान का संबंध • आलोचनात्मक मूल्यांकनरू सीमाएँ और संभावनाएँ • अनुसंधान एवं नवाचार की दिशा में उपयोग	9

Suggested Readings:

📖 प्राचीन एवं शास्त्रीय ग्रंथ

लघु वेदांग ज्योतिष (ऋग्वेदीय) – महर्षि लगध

☞ चंद्र मास, तिथि, नक्षत्र, युग गणना, यज्ञ के समय निर्धारण से संबंधित गणनात्मक प्रणाली।

वेदांग ज्योतिष (यजुर्वेदीय) – महर्षि लगध

☞ यजुर्वेद संहिता के अनुसार यज्ञ–कर्मों के समय निर्धारण हेतु उपयोगी।

ब्रह्मगुप्त कृत ब्राह्मस्फुट सिद्धांत

☞ वैदिक गणना पद्धति, ग्रहगणना, पंचांग सिद्धांत का दार्शनिक आधार।

आर्यभटीय – आर्यभट

☞ खगोल, काल–गणना, ग्रहों की गति और तिथियों के निर्धारण की वैज्ञानिक विधियाँ।

📚 आधुनिक हिंदी ग्रंथ

वेदांग ज्योतिष का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ. श्रीराम शर्मा आचार्य

☞ वेदांग ज्योतिष के सिद्धांत, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन और काल–निर्णय की व्याख्या।

भारतीय कालगणना और पंचांग शास्त्र दृ डॉ. सुधाकर द्विवेदी

☞ वैदिक और आधुनिक समय निर्धारण प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन।

ज्योतिष वेदांग का गणितीय पक्ष – पं. गजानन शास्त्री

☞ वैदिक युग की गणनाएँ, युग प्रणाली और पंचांग निर्मिति।

वेदांग ज्योतिष एवं भारतीय खगोलशास्त्र – डॉ. महेश चंद्र शर्मा

☞ ज्योतिष वेदांग की वैज्ञानिकता तथा खगोलशास्त्र से संबंध।

📘 अंग्रेज़ी पुस्तकों से पूरक अध्ययन

The Vedanga Jyotisha of Lagadha – Translation by T-S- Kuppanna Sastry

☞ मूल संस्कृत श्लोकों का अंग्रेज़ी अनुवाद और व्याख्या।

Indian Astronomy: A Source Book – S- Balachandra Rao

☞ वेदांग ज्योतिष और प्राचीन खगोलशास्त्र के विकास का ऐतिहासिक व तकनीकी दृष्टिकोण।

History of Hindu Astronomy – P-C- Sengupta

☞ वेदांग ज्योतिष से लेकर सिद्धांतिक ज्योतिष तक का क्रमिक विकास।

🧭 सहायक संसाधन

Panchang Tools & Calendars (निर्मित भारतीय ज्योतिषीय सॉफ़्टवेयर)

Digital Corpus – IGNCA] Sanskrit Documents वित वेदांग ज्योतिष

Online Platforms: Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA)/Digital Library of India

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-II

Programme: M.A. (JYOTISH)	**Year: M. A. 1st Year**	**Semester: IInd**
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY205**	Course/Paper Title:(Inter Disciplinary Skill) **ग्रहोपचार पद्वति**	

Course Outcomes:
This paper aims to provide the students the conceptual knowledge of

CO1 : छात्र वेदों एवं वेदाङ्गों की मूल अवधारणा और वेदाङ्ग ज्योतिष के महत्व को समझ सकेंगे।
CO2 : छात्र वेदाङ्ग ज्योतिष के मूल ग्रंथों और काल–गणना के प्राचीन सिद्धांतों को पढ़ने और समझने में सक्षम होंगे।
CO3 : छात्र नक्षत्रों एवं प्राचीन कालमापन की विधियों को व्यवहार में समझ सकेंगे।
CO4 : छात्र धार्मिक और सामाजिक कर्मों के लिए उचित समय निर्धारण में वेदाङ्ग ज्योतिष के उपयोग को समझ सकेंगे।
CO5 : छात्र वेदाङ्ग ज्योतिष के आधुनिक उपयोग, प्रासंगिकता और इसकी वैज्ञानिक समीक्षा करना सीखेंगे।

Credit: 2+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :
Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+0	

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**ग्रहोपचार का सिद्धांत** • ग्रहोपचार की परिभाषा व आवश्यकता • जन्मकुंडली में ग्रहों की अशुभ स्थिति • दुष्प्रभावित ग्रहों के कारण उत्पन्न समस्याएँ • ग्रहोपचार के माध्यम (मंत्र, रत्न, यंत्र, दान आदि)	6
II	**मंत्रोपचार एवं जप विधियाँ** • नवग्रहों के मंत्र और उनका प्रभाव • जप की संख्याएँ, समय, स्थान और विधि • बीज मंत्रों का प्रयोग • मंत्र सिद्धि के नियम और सावधानियाँ	6
III	**दान और व्रत द्वारा ग्रहोपचार** • ग्रह विशेष के लिए दान की विधियाँ • अनुकूल वस्तुओं का दान एवं प्रभाव • ग्रहों के व्रत और उपवास की परंपरा • शास्त्रीय प्रमाण और व्यवहारिक दृष्टिकोण	6

IV	**यंत्र और तांत्रिक उपाय** • नवग्रह यंत्रों का स्वरूप, निर्माण और स्थापना • यंत्र पूजन विधि • तांत्रिक दृष्टिकोण से ग्रह शांति • लोकाचार आधारित उपाय	6
V	**ग्रहोपचार का नैतिक और वैज्ञानिक मूल्यांकन** • उपायों में विश्वास और युक्ति का समन्वय • अंधविश्वास से बचाव • परामर्शदाता की नैतिक जिम्मेदारी • ग्रहोपचार की सीमाएँ और वैज्ञानिक संभावनाएँ	6

Suggested Readings:

📖 शास्त्रीय ग्रंथ

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र – महर्षि पाराशर

☞ ग्रह दोष, द्रष्टि, महादशा, उपाय और शांति कर्म का वर्णन।

जातक पारिजात – वद्यनाथ

☞ कुंडली में ग्रहजनित दोषों के लक्षण एवं उनके निवारण की विधियाँ।

फलदीपिका – मन्थरेश्वर

☞ ग्रहों के दोष और उनके ज्योतिषीय उपचार की सूक्ष्म विवेचना।

बृहज्जातकम् – वराहमिहिर

☞ विभिन्न योगों एवं ग्रह स्थितियों के फल, दोष और उपाय का उल्लेख।

📚 आधुनिक हिंदी ग्रंथ

ग्रह दोष और उनके उपचार – पं. भोजराज द्विवेदी

☞ नवग्रहों के अशुभ प्रभाव, शांति, रत्न, मंत्र और यंत्र उपयोग का विवरण।

ज्योतिषीय ग्रह शांति विधियाँ – पं. हेमंत शर्मा

☞ नवग्रहों की शांति के वैदिक व तांत्रिक उपाय, रुद्राभिषेक, यज्ञ विधि आदि।

ग्रह शांति के रहस्य – डॉ. सुरेश चंद्र मिश्र

☞ ग्रहों की अशुभता, दुष्प्रभाव और उनके व्यवहारिक निवारण।

रत्न, मंत्र, यंत्र द्वारा ग्रहोपचार – पं. श्रीकांत शर्मा

☞ ग्रह दोष निवारण हेतु रत्नोपचार, जप, यंत्र सिद्धि आदि की विधियाँ।

📄 अंग्रेज़ी में सहायक ग्रंथ

Astrological Remedial Measures – B-V- Raman

☞ ग्रह दोषों के विविध उपायों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वर्णन।

Practical Remedial Measures in Astrology – Sanjay Rath

☞ कुंडली में ग्रह दोष का विश्लेषण और तांत्रिक व वैदिक उपाय।

Gems and Astrology – O-P- Verma

☞ रत्नों द्वारा ग्रहजन्य दोष निवारण पर आधुनिक दृष्टिकोण।

🧭 सहायक संसाधन

ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर–Parashara's Light/ Jagannatha Hora (Graha Dosha Tools)

ऑनलाइन ज्योतिष पत्रिका व ब्लॉग: AstroSage/ Future Point आदि

YouTube Channels: ग्रह शांति विधियाँ व उपायों पर आधारित व्याख्यान

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-II

Programme: M.A. (JYOTISH)	Year: M. A. 1st Year	Semester: IInd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY206**	Course/Paper Title: **(Intra Disciplinary)** **कर्मकाण्ड पद्धति**	
Course Outcomes: This paper aims to provide the students the conceptual knowledge of		
CO1 : छात्र कर्मकाण्ड की मूल अवधारणा, श्रेणियाँ एवं समाज में उसके महत्व को समझ सकेंगे। CO2 : छात्र वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण व विधिपूर्वक प्रयोग की क्षमता अर्जित करेंगे। CO3 : छात्र विभिन्न संस्कारों की विधियों को सैद्धान्तिक और व्यावहारिक रूप से सीख सकेंगे। CO4 : छात्र कर्मकाण्डीय सामग्रियों की पहचान, चयन और उचित प्रयोग को व्यवहार में ला सकेंगे। CO5 : छात्र आधुनिक युग में कर्मकाण्ड की प्रासंगिकता, उपयोगिता और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से मूल्यांकन करना सीखेंगे।		
Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory	
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :	
Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0		

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**कर्मकाण्ड का परिचय एवं महत्व** • कर्मकाण्ड की परिभाषा और उद्देश्य • श्रौत, स्मार्त, लौकिक कर्मों का भेद • वैदिक कर्मकाण्ड और लोकाचार • यज्ञ, हवन, पूजन आदि की भूमिका	9
II	**वैदिक संहिताओं एवं मन्त्रों का व्यवहारिक उपयोग** • वैदिक मंत्रों की रचना और वर्गीकरण • संकल्प, शुद्धि, आचमन, प्राणायाम आदि की विधियाँ • स्वस्तिवाचन, शान्तिपाठ, मंगलाचरण के प्रयोग • ऋचाओं का उच्चारण एवं स्वर ज्ञान	9
III	**प्रमुख संस्कारों की विधियाँ** • गर्भाधान से अन्त्येष्टि तक के 16 संस्कारों का वर्णन • उपनयन, विवाह, नामकरण, अन्नप्राशन की विधि • हवन सामग्री, मन्त्रोच्चारण एवं पूजन क्रिया • संहिताबद्ध प्रक्रिया और उपयोग	9
IV	**कर्मकाण्ड में प्रयुक्त सामग्रियाँ एवं उपकरण** • हवनकुंड, कलश, आसन, पात्र, धूप, दीप आदि • पूजन–सामग्री का महत्व और प्रयोग	9

	• पंचगव्य, पंचामृत एवं नैवेद्य • स्वच्छता और पूजन की दिशा–विधि	
V	**आधुनिक संदर्भ में कर्मकाण्ड की प्रासंगिकता** • कर्मकाण्ड में सुधार की आवश्यकता • वैज्ञानिक दृष्टिकोण और कर्मकाण्ड • कर्मकाण्ड और पर्यावरणीय संतुलन • सामाजिक समरसता में कर्मकाण्ड की भूमिका	9

Suggested Readings: **कर्मकाण्ड पद्धति**

शास्त्रीय ग्रंथ

आपस्तंब धर्मसूत्र

☞ वैदिक संस्कारों, आचार नियमों एवं वैदिक विधियों का उल्लेख।

गृह्यसूत्र (शंखायन, अश्वलायन, पारस्कर आदि)

☞ गृहस्थ जीवन से संबंधित संस्कारों (नामकरण, विवाह, श्राद्ध, उपनयन आदि) की विधि।

मनुस्मृति

☞ जीवन पद्धति, वैदिक विधियों, कर्तव्यों और कर्मों का वर्णन।

श्रौतसूत्र और धर्मसूत्र संहिताएँ

☞ वैदिक यज्ञों, अग्निहोत्र, दरव्यानि विधियों का विशद वर्णन।

कल्पसूत्र

☞ वेदों के अनुसार यज्ञीय और संस्कारिक कर्मों की व्याख्या।

आधुनिक हिंदी ग्रंथ

वैदिक कर्मकाण्ड विधि – पं. श्रीकृष्ण शर्मा

☞ संपूर्ण वैदिक कर्मकाण्ड की सरल एवं व्यावहारिक विधियाँ।

संस्कार विधि – पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

☞ 16 संस्कारों की विस्तृत प्रक्रिया एवं मन्त्रों सहित व्याख्या।

श्राद्ध एवं तर्पण विधि – पं. भोजराज द्विवेदी

☞ श्राद्ध, पिंडदान, तर्पण आदि की विधिपूर्वक प्रक्रिया।

पूजन, हवन एवं यज्ञ पद्धति – डॉ. वसंत गाडगिल

☞ दैनिक पूजन से लेकर विशेष अनुष्ठानों की क्रमबद्ध विधियाँ।

कर्मकांड सरिता – पं. प्रकाश जोशी

☞ घर में किये जाने वाले सामान्य व विशिष्ट कर्मों की विधि।

अंग्रेज़ी ग्रंथ (पूरक अध्ययन हेतु)

Vedic Rituals and Practices – Swami Harshananda

☞ वैदिक अनुष्ठानों, पूजा विधियों और यज्ञ की प्रक्रिया का परिचय।

The Domestic Rituals of the Brahmins & Louis Renou

☞ गार्हस्थ्य कर्मकांड का शास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन।

Hindu Samskaras: Socio&Religious Study – Rajbali Pandey

☞ 16 संस्कारों का सामाजिक व धार्मिक विवेचन।

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks
Internal Class Test – 10 Marks
Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-III

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IIIrd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY301**	Course/Paper Title:	**सिद्धांत ज्योतिष**

Course Objective & Outcomes:

CO1 : छात्र सिद्धांत ज्योतिष की आधारभूत संकल्पनाओं, उसकी शाखाओं एवं प्रमुख ग्रंथों से परिचित होंगे।

CO2 : छात्र विभिन्न काल–इकाइयों की गणना और उनके ज्योतिषीय उपयोग को समझ सकेंगे।

CO3 : छात्र ग्रहों की गति एवं ग्रहणों के खगोलीय और ज्योतिषीय सिद्धांतों को जान सकेंगे।

CO4 : छात्र स्वयं पंचांग निर्माण की प्रक्रिया को समझकर उसे व्यावहारिक रूप से लागू कर सकेंगे।

CO5 : छात्र सिद्धांत ज्योतिष को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने की क्षमता विकसित करेंगे और आधुनिक उपकरणों के साथ समन्वय स्थापित कर सकेंगे।

Credit: 4+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 60+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**सिद्धांत ज्योतिष का परिचय** • सिद्धांत ज्योतिष की परिभाषा और शाखाएँ • सिद्धांत ज्योतिष बनाम होरात्मक ज्योतिष • सिद्धांत ज्योतिष के प्रमुख ग्रंथ दृ सूर्य सिद्धांत, आर्यभटीय, ब्रह्मस्फुटसिद्धांत आदि • आकाशीय गोलक की रचना और खगोल संबंधी मूलभूत जानकारी	12
II	**समय की गणना** • दिन, मास, पक्ष, ऋतु, अयन, संवत्सर की परिभाषा • अहोरात्र, तिथि, नक्षत्र, योग और करण • सौर, चंद्र एवं सावन मास • कालगणना की पद्धतियाँ दृ वैदिक और आधुनिक दृष्टिकोण	12
III	**ग्रहों की गति एवं ग्रहण सिद्धांत** • ग्रहों की वास्तविक और स्पष्ट गति • ग्रहों की अपसौर, उपसौर, चरम स्थान की गणना • चंद्र और सूर्य ग्रहण की स्थिति एवं गणना • ग्रहण का धार्मिक और खगोलिक महत्व	12
IV	**पंचांग निर्माण की प्रक्रिया** • पंचांग के पांच अंग दृ तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण • पंचांग निर्माण हेतु आवश्यक खगोल गणनाएँ • विभिन्न पंचांग पद्धतियाँ दृ दक्षिणाम्नाय, उत्तराम्नाय • पंचांग की त्रुटियाँ एवं उनका समाधान	12
V	**आधुनिक खगोल विज्ञान और सिद्धांत ज्योतिष का समन्वय** • खगोल विज्ञान के आधुनिक यंत्र और तकनीकें • सिद्धांत ज्योतिष और खगोल विज्ञान के बीच अंतर एवं साम्य	12

	• नक्षत्र वेधशालाएँ और उनका उपयोग • शोध एवं नवाचार की संभावनाएँ	

Suggested Readings:

📖 **शास्त्रीय ग्रंथ**

सूर्य सिद्धांत

☞ भारतीय खगोल विज्ञान का मूल स्रोत; ग्रहों की गति, कालगणना, अयनांश इत्यादि पर आधारित।

आर्यभटीय – आर्यभट

☞ खगोलशास्त्र, त्रिकोणमिति, कालगणना एवं ग्रह गतियों पर आधारित सिद्धांत।

पंचसिद्धांतिका – वराहमिहिर

☞ पाँच प्राचीन ज्योतिष सिद्धांतों (पैतामह, वासिष्ठ, पौलिश, रोमक, सूर्य सिद्धांत) का समेकन।

ब्रह्मस्फुट सिद्धांत – ब्रह्मगुप्त

☞ गणित और ज्योतिषीय यंत्रणाओं का विशद वर्णन।

सिद्धांत शिरोमणि – भास्कराचार्य

☞ लीलावती, बीजगणित, गोलाध्याय, ग्रहीय गति आदि का वैज्ञानिक विवेचन।

📚 **आधुनिक हिंदी ग्रंथ**

सिद्धांत ज्योतिष प्रवेशिका – पं. पुरुषोत्तम शर्मा

☞ सिद्धांत ज्योतिष की मूल अवधारणाएँ सरल भाषा में।

खगोल गणित और पंचांग निर्माण – डॉ. सुरेश चंद्र मिश्रा

☞ भारतीय खगोलशास्त्र व पंचांग निर्माण की आधुनिक व्याख्या।

गोलाध्याय और ग्रहगणित – पं. रामानुज शास्त्री

☞ खगोलीय त्रिकोणमिति, ग्रह स्थिति एवं युति गणना की विधियाँ।

वैदिक खगोल शास्त्र – डॉ. हेमंत शर्मा

☞ वैदिक और परवर्ती काल के ज्योतिषीय खगोल सिद्धांतों का समन्वय।

📘 **अंग्रेज़ी में सहायक ग्रंथ**

Indian Astronomy: A Source Book – S- Balachandra Rao

☞ प्राचीन भारतीय ज्योतिष का गणितीय पक्ष और तकनीकी विवेचन।

The Astronomical Code of the Rgveda – Subhash Kak

☞ वैदिक ऋचाओं में छिपे खगोलीय रहस्य और गणनाएँ।

Surya Siddhanta (Translation) – Ebenezer Burgess

☞ सूर्य सिद्धांत का अंग्रेज़ी अनुवाद और वैकल्पिक दृष्टिकोण।

🧭 **सहायक संसाधन**

ज्योतिषीय सॉफ़्टवेयर– Jagannatha Hora] Parashara's Light (Siddhantic calculation tools)

प्रैक्टिकल अभ्यास हेतु– पंचांग निर्माण परियोजनाएँ, ग्रह–गणना व्यायाम

संस्थान–

Indian Institute of Astrology (Kolkata)

Sampurnanand Sanskrit Vishwavidyalaya (Varanasi)

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-III

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IIIrd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY302**	Course/Paper Title:	फलित ज्योतिष

Course Objective & Outcomes:

CO1 : छात्र फलित ज्योतिष की मूलभूत अवधारणाओं और कुंडली की रचना में प्रयुक्त तत्वों को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र ग्रहों के स्वभाव, दृष्टि एवं बल के आधार पर फल निर्णय की योग्यता अर्जित करेंगे।

CO3 : छात्र प्रत्येक भाव और भावाधिपति के फलों का गहन विश्लेषण कर सकेंगे।

CO4 : छात्र विभिन्न योगों की पहचान और उनके संभावित फलों का आकलन कर सकेंगे।

CO5 : छात्र दशा और गोचर के आधार पर फल निर्णय की समग्र विधि को व्यवहार में ला सकेंगे।

Credit: 4+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 60+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**फलित ज्योतिष का परिचय** • फलित ज्योतिष की परिभाषा और स्वरूप • फलित ज्योतिष बनाम सिद्धांत ज्योतिष • जन्मकुंडली की संरचना • लग्न, राशियाँ, भाव, ग्रह और उनके अधिपत्य	12
II	**ग्रहों का स्वभाव एवं फल** • ग्रहों की प्रकृतिरू शुभ–अशुभ, स्थिर–चंचल आदि • ग्रहों की दृष्टियाँ और उनकी विशेषताएँ • ग्रहों का बल (षड्बल) और उसकी गणना • ग्रहों की स्थिति अनुसार फलों का विवेचन	12
III	**भाव विचार एवं भावाधिपति फल** • बारह भावों का अर्थ, स्वरूप और महत्व • प्रत्येक भाव से संबंधित विषयों का अध्ययन • भावेश (भाव के स्वामी) का फल • ग्रहों का विभिन्न भावों में फल	12
IV	**योग निर्माण एवं विशिष्ट योगों का फल** • योग का अर्थ और प्रकार • राजयोग, दरिद्र योग, ग्रह योग आदि • चंद्र योग, सूर्य योग, बुधादित्य योग • योगफल निर्णय में दशा और दृष्टि का महत्व	12
V	**दशा प्रणाली एवं गोचर विचार** • दशा प्रणालीरू विनशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी दशा • महादशा, अंतरदशा, प्रत्यंतरदशा • गोचर ग्रहों का प्रभाव • दशा और गोचर के समन्वय से भविष्यवाणी	12

Suggested Readings:

📖 शास्त्रीय ग्रंथ

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र – महर्षि पाराशर

☞ फलित ज्योतिष का आधारभूत ग्रंथ; भाव, ग्रह, दशा, योगों का विस्तारपूर्वक वर्णन।

जातक पारिजात – वद्यनाथ

☞ जन्म कुंडली के विभिन्न भावों, योगों एवं ग्रहों की स्थितियों का प्रभाव।

फलदीपिका – मन्थरेश्वर

☞ भावफल, ग्रहफल, दशा फल, योग, दृष्टि आदि का सरल व्याख्यान।

सारावली – कश्यप

☞ ग्रहों की विभिन्न राशियों में स्थिति के अनुसार फल की विवेचना।

बृहत्जातक – वराहमिहिर

☞ फलित ज्योतिष के विविध पक्ष जैसे ग्रहों के फल, योग, आयु गणना आदि।

📚 आधुनिक हिंदी ग्रंथ

फलित ज्योतिष का सिद्धांत एवं व्यवहार – पं. भोजराज द्विवेदी

☞ व्यवहारिक फलित ज्योतिष, कुंडली विश्लेषण और दशा विवेचन।

गोचर फल विचार – पं. रामानुज त्रिपाठी

☞ ग्रहों के गोचर अनुसार विभिन्न भावों में फल की विवेचना।

दशा प्रणाली और फल निर्णय – डॉ. सुरेश मिश्र

☞ दशा और अंतरदशा के फल निर्णय की वैज्ञानिक प्रणाली।

भाव विवेचन – पं. श्रीकृष्ण शर्मा

☞ बारह भावों का विस्तृत विवेचन एवं उनके ज्योतिषीय फल।

कुंडली विश्लेषण विधि – डॉ. संजय राठ

☞ आधुनिक परिप्रेक्ष्य में फलित ज्योतिष की विश्लेषणात्मक विधियाँ।

📘 अंग्रेज़ी में सहायक ग्रंथ

How to Judge a Horoscope (Vol- 1 & 2) – B-V- Raman

☞ जन्मपत्रिका के विश्लेषण के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन।

Predictive Astrology – K-N- Rao

☞ दशा प्रणाली, गोचर और व्यवहारिक भविष्यवाणी पर दृष्टिकोण।

Astrology of the Seers – Dr- David Frawley

☞ पारंपरिक भारतीय फलित ज्योतिष का समग्र परिचय।

🧭 सहायक संसाधन

ज्योतिषीय सॉफ़्टवेयर– Jagannatha Hora] Kundli Chakra] Parashara's Light

ऑनलाइन व्याख्यान– यूट्यूब चौनल जैसे Saptarishis Astrology/AstroSage

व्यवहारिक अभ्यास– कुंडली विश्लेषण प्रैक्टिस, केस स्टडी कार्य

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-III

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IIIrd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY303**	Course/Paper Title:	परासरीय ज्योतिष

Course Objective & Outcomes:

CO1 : छात्र पराशर मुनि के योगदान और उनकी पद्धति की विशेषताओं को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र पराशरी पद्धति में ग्रहों के बल और दृष्टियों का फलित उपयोग कर सकेंगे।

CO3 : छात्र भाव और भावेश के अनुसार फल निर्णय की दक्षता प्राप्त करेंगे।

CO4 : छात्र पराशरी ज्योतिष में वर्णित प्रमुख योगों का ज्ञान अर्जित कर सकेंगे और उनका फल निकाल सकेंगे।

CO5 : छात्र पराशरी पद्धति में दशा प्रणाली का उपयोग कर फल निर्धारण करना सीखेंगे।

Credit: 4+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 60+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**पराशरीय ज्योतिष का परिचय** • महर्षि पराशर और उनकी ज्योतिषीय परंपरा • बृहत्पाराशरहोराशास्त्र का स्वरूप एवं महत्व • पराशरी प्रणाली की विशिष्टताएँ • लग्न, ग्रह, भाव एवं राशियों की भूमिका	12
II	**ग्रहों का स्वभाव, दृष्टि एवं बल** • नवग्रहों का स्वभाव और फल • ग्रहों की दृष्टियाँ दृ पूर्ण एवं विशेष दृष्टि • षड्बल का सिद्धांत (स्थानीय, दिग्बल, कालबल, चेष्टाबल आदि) • ग्रह बल निर्धारण की विधियाँ	12
III	**भाव विचार एवं भावेश फल** • बारह भावों की परिभाषा और महत्व • भाव से संबंधित विषयों की विवेचना • भावेश (भाव स्वामी) का भावानुसार फल • भाव में स्थित ग्रह का प्रभाव	12
IV	**योग निर्माण एवं शुभाशुभ योग** • योग का तात्पर्य और प्रकार • पराशरी योग दृ राजयोग, विपरीत राजयोग, दरिद्र योग आदि • ग्रहों के संयोग से बनने वाले योग • योग फल की गूढ़ विवेचना	12
V	**दशा प्रणाली और उपयोग** • विन्शोत्तरी दशा का परिचय • महादशा, अंतरदशा और प्रत्यंतरदशा • दशा निर्णय के सिद्धांत • दशा फल का भाव, भावेश एवं दृष्टि से विश्लेषण	12

Suggested Readings:

📖 **शास्त्रीय ग्रंथ**

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र – महर्षि पाराशर

☞ पराशरी सिद्धांतों का मूल ग्रंथ; भाव, ग्रह, दृष्टि, दशा, योग आदि का गहन वर्णन।

फलदीपिका – मन्थरेश्वर

☞ पराशरी पद्धति पर आधारित भाव और ग्रहों के फल का विशद विवेचन।

जातक पारिजात – वद्यनाथ

☞ पराशरी दृष्टिकोण से जन्मकुंडली का विश्लेषण एवं भविष्यफल निर्धारण।

सारावली – कश्यप

☞ पराशरी सिद्धांतों के अनुकूल ग्रह योगों का गहराई से विवेचन।

📚 **आधुनिक हिंदी ग्रंथ**

पराशरी ज्योतिष का सिद्धांत और व्यवहार – पं. रामानुज त्रिपाठी

☞ पराशरी सिद्धांतों की आधुनिक शैली में प्रस्तुति एवं विश्लेषण।

पराशरी दशा प्रणाली – डॉ. सुरेश मिश्र

☞ विमशोत्तरी दशा, अंतरदशा, प्रत्यंतर दशा एवं उनका फलादेश।

भाव फल विचार – पं. श्रीकृष्ण शर्मा

☞ बारह भावों का विश्लेषण पराशरी सिद्धांतों के अनुरूप।

ग्रह योग विचार – पं. भोजराज द्विवेदी

☞ विभिन्न योगों का फल निर्धारण पराशरी दृष्टिकोण से।

कुंडली विश्लेषण की पराशरी विधि – डॉ. हेमंत शर्मा

☞ व्यवहारिक उदाहरणों के माध्यम से पराशरी ज्योतिष की शिक्षा।

📘 **अंग्रेज़ी में सहायक ग्रंथ**

Brihat Parashara Hora Shastra (Trans- & Commentary) – R- Santhanam / Girish Chand Sharma

☞ मूल श्लोकों के साथ अंग्रेज़ी में सरल व्याख्या।

Learn Hindu Astrology Easily – B-V- Raman

☞ पराशरी सिद्धांतों की सरल शैली में प्रस्तुति।

Predicting through Jaimini and Parashara – K-N- Rao

☞ पराशरी और जैमिनी दोनों पद्धतियों की तुलनात्मक व्याख्या।

सहायक संसाधन

ज्योतिषीय सॉफ़्टवेयर– Jagannatha Hora (पराशरी दशा प्रणाली हेतु उपयुक्त)

ऑनलाइन संसाधन–

यूट्यूब: "Saptarishis Astrology"

वेबसाइट– vedicastrology-org

प्रैक्टिकल केस स्टडी– पूर्व जन्मपत्रिकाओं का पराशरी पद्धति से विश्लेषण

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-III

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IIIrd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY304A**	Course/Paper Title:	चिकित्सा ज्योतिष

Course Objective & Outcomes:

CO1 : छात्र चिकित्सा ज्योतिष की मूल अवधारणाओं और इसकी उपयोगिता को समझ सकेंगे।चिकित्सा ज्योतिष

CO2 : छात्र कुंडली के भावों और ग्रहों के आधार पर रोगों का संकेत पहचान सकेंगे।

CO3 : छात्र ग्रहों और भावों के विश्लेषण से रोग की प्रवृत्ति और प्रकृति का अनुमान लगा सकेंगे।

CO4 : छात्र रोग के समय और अवधि की जानकारी दशा एवं गोचर के आधार पर प्राप्त कर सकेंगे।

CO5 : छात्र विभिन्न ज्योतिषीय उपायों द्वारा रोगों से राहत दिलाने की विधियों को जान सकेंगे।

Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**चिकित्सा ज्योतिष का परिचय** • चिकित्सा ज्योतिष की परिभाषा और उद्देश्य • पारंपरिक एवं आधुनिक चिकित्सा ज्योतिष का तुलनात्मक अध्ययन • शरीर और ज्योतिष का संबंध • जन्मकुंडली में स्वास्थ्य संकेत	9
II	**भाव, ग्रह और स्वास्थ्य संकेत** • लग्न एवं षष्ठ भाव का स्वास्थ्य से संबंध • आठवें और बारहवें भाव का रोगों से संबंध • ग्रहों का प्रभाव दृ सूर्य, चंद्र, मंगल आदि • पाप ग्रह और रोग कारक	9
III	**रोगों के प्रकार और ग्रह प्रभाव** • शारीरिक रोग दृ हृदय, यकृत, त्वचा, मस्तिष्क आदि • मानसिक रोग दृ चिंता, अवसाद, अनिद्रा आदि • ग्रहों द्वारा उत्पन्न रोग दृ शनि, राहु, केतु आदि • विशेष ग्रह संयोग से होने वाले रोग	9
IV	**दशा, गोचर एवं रोग की अवधि** • रोग आरंभ की दशा और ग्रह स्थिति • गोचर ग्रहों का प्रभाव • रोग की अवधि, पुनरावृत्ति और गंभीरता का मूल्यांकन • दशा गोचर समन्वय द्वारा रोग की भविष्यवाणी	9
V	**ज्योतिषीय उपचार और समाधान** • रत्न चिकित्सा का उपयोग • मन्त्र, यन्त्र, दान और हवन आदि उपाय • ग्रह शांति और विशेष अनुष्ठान • व्यावहारिक जीवन में उपयोग	9

Suggested Readings:

📖 **शास्त्रीय एवं परंपरागत ग्रंथ**

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र – महर्षि पाराशर

☞ रोग निवारण संबंधी योग, भावफल, दशा के प्रभाव का विश्लेषण।

जातक पारिजात – वद्यनाथ

☞ विभिन्न भावों, ग्रहों और योगों से संबंधित रोगों का विवेचन।

फलदीपिका – मन्थरेश्वर

☞ शरीर के अंगों और रोगों का भाव आधारित विश्लेषण।

सारावली – कश्यप

☞ जन्मकुंडली में रोग विचार हेतु ग्रहों की भूमिका।

📚 **आधुनिक हिंदी ग्रंथ**

चिकित्सा ज्योतिष – पं. रामनारायण दुबे

☞ जन्मकुंडली से रोग पहचानने की विधियाँ और उपचार।

ज्योतिष और आयुर्वेद – डॉ. सुरेश चंद्र मिश्र

☞ ग्रहों और दोषों के माध्यम से रोग का कारण और निवारण।

रोग और ग्रह – पं. श्रीकृष्ण शर्मा

☞ विभिन्न ग्रहों से संबंधित शारीरिक व मानसिक रोग।

कुंडली से रोग विश्लेषण – पं. भोजराज द्विवेदी

☞ व्यवहारिक उदाहरणों के माध्यम से रोगों की कुंडली विश्लेषण पद्धति।

ज्योतिषीय चिकित्सा विज्ञान – डॉ. हेमंत शर्मा

☞ चिकित्सा ज्योतिष की आधुनिक एवं शोधपरक व्याख्या।

📄 **अंग्रेज़ी में सहायक ग्रंथ**

Medical Astrology & Judith Hill

☞ पश्चिमी और वैदिक पद्धतियों से चिकित्सा ज्योतिष का तुलनात्मक अध्ययन।

Astro&Medicine: Astrology and Healing Arts – Dr- Robert Svoboda

☞ आयुर्वेदिक दृष्टिकोण और ज्योतिष का मेल।

Predictive Health through Astrology – K-N- Rao

☞ दशा, गोचर एवं भावों से रोग पहचान और भविष्यवाणी।

Planets and Health – William F- Lilly

☞ ग्रहों की रोगों से संबद्धता का विवेचन।

🔆 **सहायक संसाधन**

ज्योतिषीय सॉफ़्टवेयर– Kundli Chakra] Jagannatha Hora (वित medical indications)

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म–

यूट्यूब चौनल– "Saptarishis Astrology" – Medical Astrology Playlist

वेबसाइट– www-astrologyforthesoul-com

प्रैक्टिकल अभ्यास–

रोगों की कुंडली केस स्टडी

ग्रह शांति व उपाय आधारित प्रोजेक्ट

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-III

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IIIrd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY304B**	Course/Paper Title:	**फेंग सूई**

Course Objective & Outcomes:

CO1 : छात्र फेंग शुई के मूलभूत सिद्धांतों और उसके ऐतिहासिक एवं दार्शनिक संदर्भ को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र ऊर्जा प्रवाह, दिशाओं और बगुआ की व्यावहारिक समझ प्राप्त करेंगे।

CO3 : छात्र आवासीय व व्यावसायिक स्थलों में सकारात्मक ऊर्जा निर्माण हेतु फेंग शुई के उपाय जानेंगे।

CO4 : छात्र फेंग शुई वस्तुओं और प्रतीकों के उपयोग को जानकर जीवन में संतुलन बना सकेंगे।

CO5 : छात्र फेंग शुई को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों दृ स्वास्थ्य, संबंध, व्यवसाय दृ में व्यावहारिक रूप से लागू करना सीखेंगे।

Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**फेंग शुई का परिचय** • फेंग शुई की परिभाषा और इतिहास • फेंग शुई का दार्शनिक आधार दृ यिन–यांग, पाँच तत्व सिद्धांत • फेंग शुई बनाम भारतीय वास्तु शास्त्र • पर्यावरणीय ऊर्जा और उसका प्रभाव	9
II	**ऊर्जा चक्र और दिशाओं का महत्व** • "ची" (Chi) ऊर्जा का सिद्धांत • दिशा ज्ञान दृ उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम का महत्व • Bagu (बगुआ) मानचित्र का परिचय और प्रयोग • फेंग शुई कम्पास का प्रयोग	9
III	**आवासीय एवं व्यावसायिक स्थानों में फेंग शुई** • घर में कमरों की स्थिति और उनका फेंग शुई प्रभाव • शयनकक्ष, रसोई, प्रवेश द्वार आदि की स्थिति • व्यापारिक स्थानों में फेंग शुई के सिद्धांत • ऊर्जा अवरोधों की पहचान और समाधान	9
IV	**प्रतीकों एवं वस्तुओं का प्रयोग** • फेंग शुई में प्रयुक्त प्रमुख प्रतीक दृ मछली, कछुआ, ड्रैगन आदि • फेंग शुई पौधे, झंडियाँ, लाफिंग बुद्धा • क्रिस्टल, पानी के फव्वारे, दर्पण का प्रयोग • प्रतीकों के दिशा अनुसार स्थान	9
V	**आधुनिक जीवन में फेंग शुई का उपयोग** • मानसिक स्वास्थ्य और फेंग शुई • व्यवसायिक सफलता में फेंग शुई की भूमिका • संबंध सुधार में फेंग शुई • फेंग शुई की सीमाएँ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण	9

Suggested Readings:

📚 **प्रामाणिक अंग्रेज़ी ग्रंथ**

The Complete Idiot's Guide to Feng Shui – Elizabeth Moran] Joseph Yu & Val Biktashev

☞ फेंग शुई की मूल अवधारणाएँ, इतिहास, यांग–यिन सिद्धांत, पाँच तत्व, दिशाएं आदि।

Feng Shui for Dummies – David Daniel Kennedy

☞ व्यावहारिक दृष्टिकोण से घर, कार्यालय, और व्यक्तिगत ऊर्जा सुधार हेतु उपाय।

Move Your Stuff] Change Your Life – Karen Rauch Carter

☞ सरल भाषा में जीवन में परिवर्तन लाने के लिए प्रभावशाली फेंग शुई तकनीकें।

Feng Shui Your Life – Jayme Barrett

☞ वास्तु, इंटीरियर डिज़ाइन और आध्यात्मिक संतुलन का समन्वय।

Lillian Too's Easy&to&Use Feng Shui – Lillian Too

☞ विश्वविख्यात विशेषज्ञ द्वारा फेंग शुई की व्यावहारिक गाइड।

The Western Guide to Feng Shui – Terah Kathryn Collins

☞ पश्चिमी देशों में फेंग शुई के अनुरूप जीवन शैली समायोजन।

📖 **हिंदी में सहायक पठन सामग्री**

फेंग शुई और जीवन में समृद्धि – पं. विजय शर्मा

☞ फेंग शुई के सिद्धांतों का भारतीय परिप्रेक्ष्य में सरल वर्णन।

फेंग शुई – समृद्धि की चाबी – डॉ. राकेश मिश्रा

☞ घर व कार्यस्थल में सकारात्मक ऊर्जा के लिए दिशाओं व वस्तुओं की भूमिका।

फेंग शुई और वास्तु – हेमंत जैन

☞ फेंग शुई और भारतीय वास्तुशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन।

🌐 **ऑनलाइन एवं डिजिटल संसाधन**

वेबसाइट्स–

www-fengshui-com

www-lilliantoo-com

www-wofs-com (World of Feng Shui)

YouTube pkSuYl:

''Feng Shui by Lillian Too''

"Learn Feng Shui with Karen Carter"

"Vastu & Feng Shui Tips – Vastu Living"

मोबाइल ऐप्स–

Feng Shui Compass

Feng Shui Master

House Feng Shui Tips

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-III

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IIIrd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY304C**	Course/Paper Title:	रमल ज्योतिष

Course Objective & Outcomes:

CO1 : छात्र रमल ज्योतिष के इतिहास, मूल प्रकृति और सिद्धांतों को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र रमल रेखा निर्माण की विधि को व्यवहारिक रूप में लागू कर सकेंगे।

CO3 : छात्र रमल चक्र एवं उसके घटकों को समझकर प्रश्न का विश्लेषण कर सकेंगे।

CO4 : छात्र विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का रमल द्वारा विश्लेषण करना सीखेंगे।

CO5 : छात्र रमल ज्योतिष को आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं में कैसे उपयोग करें, यह समझ सकेंगे।

Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**रमल ज्योतिष का परिचय** • रमल ज्योतिष की उत्पत्ति एवं इतिहास • रमल और अन्य ज्योतिषीय पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन • रमल के उपयोग का दार्शनिक व आध्यात्मिक आधार • प्रश्न आधारित भविष्यवाणी की भूमिका	9
II	**रमल रेखा निर्माण की विधि** • रमल रेखा कैसे बनती है? • अंकन विधियाँ (बिंदु, लकीरें, गोले आदि) • चार मूल चिह्न और उनका अर्थ • यंत्रात्मक प्रस्तुति	9
III	**रमल चक्र और उसके अंग** • रमल चक्र का स्वरूप और खण्ड • 16 मूल रमल चिह्न (फ़िगर्स) • घर (हाउस) और उनका महत्व • प्रश्न चक्र की रचना और उसका प्रयोग	9
IV	**प्रश्नों का विश्लेषण एवं फल निर्णय** • विभिन्न विषयों पर प्रश्नों का वर्गीकरण (स्वास्थ्य, धन, यात्रा, विवाह आदि) • प्रश्न पूछने की शुद्ध विधि • उत्तर निकालने की प्रक्रिया • रमल चिह्नों का फलनिर्णय में प्रयोग	9
V	**रमल का आधुनिक प्रयोग एवं सीमाएँ** • आधुनिक संदर्भ में रमल ज्योतिष की उपयोगिता • अन्य विधियों (टैरो, प्रश्न कुंडली आदि) से तुलना • रमल के प्रयोग में सावधानियाँ • रमल की वैज्ञानिक एवं आलोचनात्मक समीक्षा	9

Suggested Readings:

📖 **हिंदी भाषा में प्रमुख ग्रंथ**

रमल रहस्य – पं. गोवर्धन शर्मा

☞ रमल ज्योतिष की मूल अवधारणाएं, चौक, यंत्र निर्माण, प्रश्न निर्णय की प्रक्रिया।

रमल शास्त्र – पं. श्रीकृष्ण शर्मा

☞ बीज, अंक, ग्रह, घर एवं उत्तर देने की तकनीक।

रमल ज्योतिष सार – डॉ. हेमंत शर्मा

☞ रमल के सिद्धांत, नियम, व्यवहारिक उदाहरण एवं व्याख्या।

रमल निर्णय पद्धति – पं. भोजराज द्विवेदी

☞ रमल के माध्यम से प्रश्नों का समाधान करने की सरल विधि।

रहस्य रमल विद्या – पं. लल्लन शास्त्री

☞ प्राचीन रमल सूत्रों की विस्तृत और गूढ़ व्याख्या।

📚 **अन्य भारतीय भाषाओं में सहायक ग्रंथ**

Ramala Shastra (Telugu @ Tamil में उपलब्ध) – विभिन्न स्थानीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा

☞ क्षेत्रीय भाषाओं में रमल का प्रयोगात्मक और सिद्धांतपरक विवरण।

📚 **अंग्रेज़ी में आधुनिक पठन सामग्री**

The Oracle of Geomancy – Stephen Skinner

☞ रमल (Geomancy) की पश्चिमी परंपरा से व्याख्या, अरबी मूल स्रोतों पर आधारित।

Prashna Tantra and Ramala – K-S- Krishnamurti (KP System Perspective)

☞ प्रश्न और रमल के संयोजन से भविष्यवाणी की प्रक्रिया।

The Art and Practice of Geomancy – John Michael Greer

☞ रमल के प्रतीकों, रूपरेखाओं और उत्तर विश्लेषण की आधुनिक शैली।

🌐 **ऑनलाइन संसाधन**

YouTube चौनल्स:

"Saptarishis Astrology" – रमल ज्योतिष Playlist

"Jyotish Vedang" – रमल चौक सीखने की शृंखला

वेबसाइट्स–

www-saptarishisastrology-com

www-indian&astrology-com – रमल संबंधित लेख

www-astrosage-com – रमल उपकरण व सामग्री (सीमित)

📄 **शोध एवं प्रैक्टिस के लिए**

प्राचीन रमल ग्रंथों की पांडुलिपियाँ (स्थानीय पुस्तकालय या विश्वविद्यालय विभागों में)

प्रश्न कुण्डली और रमल का तुलनात्मक अभ्यास

रमल चौक निर्माण की प्रक्रिया और उत्तर व्याख्या के प्रोजेक्ट

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-III

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IIIrd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY305**	Course/Paper Title:	विवाह पद्धति एवं श्राद्ध कर्म

Course Objective & Outcomes:

CO1 : छात्र वैदिक विवाह की मूल अवधारणा और उसके विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र विवाह के मुहूर्त निर्धारण तथा ज्योतिषीय विवेचन की विधियों को जान सकेंगे।

CO3 : छात्र विवाह विधि एवं वैदिक मंत्रों के अर्थ और प्रयोग में दक्षता प्राप्त करेंगे।

CO4 : छात्र श्राद्ध की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि और धार्मिक आवश्यकता को समझ सकेंगे।

CO5 : छात्र श्राद्ध विधियों को व्यवहार में लाने की क्षमता अर्जित करेंगे और उनसे जुड़ी शुद्ध परंपरा को समझ सकेंगे।

Credit: 2+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**वैदिक विवाह संस्कार का परिचय** • विवाह संस्कार की वैदिक परंपरा • विवाह के आठ प्रकार दृ ब्राह्म, दैव, आर्ष आदि • विवाह की सामाजिक व आध्यात्मिक भूमिका • विवाह में पंच महायज्ञों की उपस्थिति	6
II	**विवाह के विधिक पक्ष और मुहूर्त विचार** • विवाह हेतु योग्य मुहूर्त निर्धारण की विधि • विवाह में ग्रह, नक्षत्र, तिथि, वार, योग, करण का विचार • विवाह के दोष (गणदोष, नाड़ी दोष) एवं उनके शमन • विवाह पत्रिका मिलान की भूमिका	6
III	**विवाह की विधि एवं मंत्र प्रयोग** • विवाह की वैदिक विधियाँ दृ कन्यादान, पाणिग्रहण, सप्तपदी आदि • प्रमुख वैदिक मंत्र एवं उनके अर्थ • विवाह संस्कार में प्रयुक्त सामग्री • समसामयिक विवाह में वैदिक विधि का समावेश	6
IV	**श्राद्ध कर्म का परिचय एवं महत्व** • श्राद्ध की परिभाषा, उद्देश्य और प्रकार • पितृ ऋण की अवधारणा • महालय श्राद्ध, मासिक श्राद्ध, वार्षिक श्राद्ध आदि • श्राद्ध से संबंधित धर्मशास्त्रीय निर्देश	6
V	**श्राद्ध की विधि एवं तर्पण प्रक्रिया** • श्राद्ध कर्म की क्रमबद्ध विधियाँ • तर्पण, पिंडदान, ब्राह्मण भोजन आदि • श्राद्ध मंत्रों का उच्चारण और अर्थ • श्राद्ध कर्म में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ	6

Suggested Readings:

📖 **हिंदी व संस्कृत ग्रंथ**

गृह्यसूत्र (आश्वलायन, आपस्तम्ब आदि) – मूल वैदिक ग्रंथ

☞ विवाह, श्राद्ध, यज्ञ एवं गृह्यकर्म की वैदिक विधियाँ।

धर्मसिन्धु – काशीनाथ उपाध्याय

☞ विभिन्न संस्कारों की तिथियाँ, विधान, विशेष परिस्थितियों के नियम।

श्राद्ध तत्त्व – पं. हरिहरानंद

☞ श्राद्ध की आवश्यकता, पिंडदान, तर्पण, कर्मकांड का शास्त्रीय विवरण।

संस्कार दीपिका – पं. वासुदेव शास्त्री अभ्यंकर

☞ विवाह व अन्य संस्कारों की संक्षिप्त विधि व सामग्री सूची।

विवाह पद्धति – पं. श्रीधर भट्ट

☞ सप्तपदी, कन्यादान, वरवरण, होम, मंत्रों का अर्थ व विधि।

श्राद्ध निर्णय – पं. लल्लू लाल द्विवेदी

☞ श्राद्ध के विभिन्न प्रकार – एकोद्दिष्ट, पार्वण, काम्य श्राद्ध आदि।

📘 **आधुनिक व्यावहारिक ग्रंथ (हिंदी में)**

हिंदू विवाह एवं संस्कार विधि – डॉ. रामनाथ त्रिपाठी

☞ विवाह के प्रकार, मांगलिक कृत्य, कर्मकांड की व्याख्या।

श्राद्ध और पितृकर्म – पं. रामचंद्र शुक्ल

☞ पितृ पक्ष, तर्पण, पिंडदान की संक्षिप्त व्याख्या।

संस्कार विधि संग्रह – पं. विष्णुदत्त

☞ विवाह, उपनयन, नामकरण से लेकर श्राद्ध तक की विधियों का संग्रह।

विवाह संस्कार और कर्मकांड – डॉ. श्यामनारायण मिश्र

☞ पारंपरिक और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विवाह पद्धति की व्याख्या।

📘 **अन्य सहायक संदर्भ**

मनुस्मृति/याज्ञवल्क्य स्मृति

☞ विवाह के आठ प्रकार, श्राद्ध का धर्मशास्त्रीय आधार।

अपरा कर्म पद्धति – पं. रामेश्वर शास्त्री

☞ मरणोपरांत कर्म, अपरा श्राद्ध की विधियाँ।

💻 ऑनलाइन व डिजिटल संसाधन

YouTube चौनल्स–

''संस्कार विधि'' – वेदपाठी ब्राह्मणों द्वारा श्राद्ध/विवाह कर्म प्रदर्शन

"Karmakand Guruji" – कर्मकांड पर व्यावहारिक वीडियो

वेबसाइट्स–

www-karmkand-in

www-hindupath-in – विवाह व श्राद्ध विधियों का संकलन

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-III

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IIIrd
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY306**	Course/Paper Title:	ज्योतिष एवं वास्तु में मूहूर्त निर्धारण

Course Objective & Outcomes:

CO1 : छात्र मुहूर्त की मूल परिभाषा, उपयोगिता तथा उसका व्यावहारिक महत्व समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र पंचांग के विभिन्न अंगों को पढ़ना और उनकी शुद्धि के आधार पर मुहूर्त निर्धारित करना सीख सकेंगे।

CO3 : छात्र ग्रहों की स्थिति एवं विशेष कालखंडों के आधार पर मुहूर्त निर्धारित कर सकेंगे।

CO4 : छात्र विभिन्न धार्मिक, पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों के लिए उचित मुहूर्त का चयन करना सीखेंगे।

CO5 : छात्र वास्तु विज्ञान के संदर्भ में ज्योतिषीय सिद्धांतों के अनुरूप मुहूर्त निर्धारण में दक्षता प्राप्त करेंगे।

Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**मुहूर्त का परिचय** • मुहूर्त की परिभाषा, महत्व और आवश्यकता • मुहूर्त एवं काल विवेचन का संबंध • शुभ–अशुभ काल की अवधारणाएँ • मुहूर्त का धार्मिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक पक्ष।	9
II	**पंचांग के अंगों का विवेचन** • तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण की व्याख्या • शुभाशुभ तिथि, वार और योग • पंचांग शुद्धि का महत्व • दोषयुक्त समय और उसका परिहार	9
III	**ज्योतिष में विशेष योग और मुहूर्त** • अभिजीत मुहूर्त, ब्रह्म मुहूर्त, विजय मुहूर्त • राहुकाल, यमघण्टक, गुलिककाल • चन्द्रबल, ताराबल, लग्न विचार • ग्रह स्थिति के अनुसार मुहूर्त चयन	9
IV	**विभिन्न कार्यों हेतु मुहूर्त विचार** • विवाह, गृहप्रवेश, नामकरण, उपनयन, वाहन खरीद, व्यापार प्रारंभ आदि • निर्माण कार्यों हेतु शुभ मुहूर्त • संस्कारों के लिए विशिष्ट मुहूर्त • जातक की कुंडली के आधार पर मुहूर्त निर्धारण	9
V	**वास्तु और मुहूर्त का समन्वय** • वास्तु निर्माण में दिशा, दिन और लग्न का महत्व • भूमि पूजन, शिलान्यास, द्वार स्थापन, गृह प्रवेश के मुहूर्त • वास्तु दोष शमन हेतु मुहूर्त	9

	• ज्योतिष और वास्तु का परस्पर पूरक संबंध	

Suggested Readings:

📖 प्राचीन/शास्त्रीय ग्रंथ (संस्कृत/हिंदी टीका सहित)

मूहूर्त चिंतामणि – पं. रामदत्त शास्त्री

☞ विवाह, गृह प्रवेश, नामकरण, यज्ञोपवीत आदि संस्कारों हेतु विशिष्ट मूहूर्त सिद्धांत।

कालनिर्णय ग्रंथ – रघुनंदनाचार्य

☞ शुभाशुभ काल, मासानुसार मूहूर्त और वर्जित तिथियों का विवरण।

वृहज्जातक – वराहमिहिर (मूहूर्त अध्याय सहित)

☞ वैदिक ज्योतिष के मूल आधार सहित विशेष मूहूर्त विवेचन।

धर्मसिन्धु – पं. काशीनाथ उपाध्याय

☞ कर्मकांड, व्रत, पर्व और शुभाशुभ तिथियों का सार संग्रह।

निर्णयसिन्धु – गोविंदाचार्य

☞ विवाह, संस्कार एवं वास्तु प्रारंभ के योग्य मूहूर्त निर्धारण।

📘 आधुनिक ग्रंथ / संदर्भ ग्रंथ (हिंदी)

मूहूर्त दर्शन – डॉ. शंकर दत्त शर्मा

☞ मूहूर्त विचार का आधुनिक विश्लेषण तथा दैनिक जीवन में उपयोग।

वास्तु एवं मूहूर्त विज्ञान – पं. विजय शर्मा

☞ वास्तु की दिशा अनुसार भवन निर्माण हेतु उपयुक्त मूहूर्त एवं दोष विचार।

मूहूर्त विचार विज्ञान – पं. रमेश दुबे

☞ नवग्रह, तिथि, वार, लग्न, नक्षत्र आदि के आधार पर मूहूर्त निर्धारण की विधि।

शुभ मूहूर्त विचार – पं. गोपाल शास्त्री

☞ व्यापार, विवाह, गृह निर्माण, वाहन क्रय आदि कार्यों के लिए मूहूर्त चयन।

वास्तु–मूहूर्त निर्णय – पं. रविशंकर अवस्थी

☞ वास्तु व ज्योतिष के एकीकृत दृष्टिकोण से मूहूर्त निर्धारण।

📗 सहायक ज्योतिष ग्रंथ

पंचांग तत्व विचार – पं. रघुनाथ शास्त्री

☞ पंचांग के पाँच अंगों (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण) की मूहूर्त में भूमिका।

लग्न चक्र विचार – डॉ. राजेंद्र शुक्ल

☞ लग्न एवं ग्रह स्थिति का मूहूर्त पर प्रभाव।

🌐 ऑनलाइन संसाधन

वेबसाइट्स–

www-panchang-org – मूहूर्त कैलेंडर

www-drikpanchang-com – दैनिक मूहूर्त विश्लेषण

www-astrojyoti-com – मूहूर्त पर प्राचीन लेख

YouTube चौनल्स–

"Saptarishis Astrology" – मूहूर्त शृंखला

"Dr- Arvind Tripathi Jyotish" – मूहूर्त एवं वास्तु पर वीडियो व्याख्यान

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-IV

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IVth
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY401**	Course/Paper Title:	चन्द्र श्रृगोन्नति एवं वेध परम्परा

Course Objective & Outcomes: **चन्द्र श्रृगोन्नति एवं वेध परम्परा**

CO1 : छात्र चन्द्रमा की खगोलीय गतिविधियों एवं ज्योतिषीय महत्व को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र चन्द्र श्रृगोन्नति की गणना एवं उसका फलित प्रभाव जानने में सक्षम होंगे।

CO3 : छात्र वेध की वैदिक परंपरा एवं उसके समय निर्धारण को जान सकेंगे।

CO4 : छात्र विभिन्न प्रकार के वेध, उनके फल और निवारण के उपायों को व्यवहारिक रूप में समझ सकेंगे।

CO5 : छात्र आधुनिक संदर्भ में चन्द्र श्रृगोन्नति एवं वेध सिद्धांतों की प्रासंगिकता को जान सकेंगे एवं उनका वैज्ञानिक विश्लेषण कर सकेंगे।

Credit: 4+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 60+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**चन्द्र का खगोलीय स्वरूप एवं गति** • चन्द्र ग्रह का खगोलशास्त्रीय परिचय • चन्द्र की गतियाँ दृ सौरपथ एवं नाक्षत्र पथ • चन्द्र के उदय, अस्त, गमन और भ्रमण की प्रणाली • चन्द्र की कलाएँ एवं उनका महत्व	12
II	**चन्द्र श्रृगोन्नति का सिद्धान्त** • श्रृगोन्नति (Apogee & Perigee) की परिभाषा • चन्द्र श्रृगोन्नति की गणना • ज्योतिषीय दृष्टिकोण से श्रृगोन्नति का प्रभाव • श्रृगोन्नति का कुंडली में प्रभाव मूल्यांकन	12
III	**वेध परम्परा का वैदिक आधार** • वेध की परिभाषा एवं तात्त्विक आधार • वेध का प्रयोगरू ग्रह, नक्षत्र, तिथि आदि में • वैदिक संहिताओं में वेध का उल्लेख • वेध का समय निर्धारण	12
IV	**वेध के प्रकार एवं प्रभाव** • तारा वेध, चन्द्र वेध, सूर्य वेध, नक्षत्र वेध • कार्य विशेष पर वेध के प्रभाव दृ विवाह, यात्रा, संस्कार आदि • वेध दोष और शांति उपाय • वेध निर्णय में पंचांग का प्रयोग	12
V	**आधुनिक संदर्भ में चन्द्र श्रृगोन्नति एवं वेध की उपयोगिता** • खगोलीय उपकरणों से चन्द्रगति का परीक्षण • ज्योतिषीय निर्णय में श्रृगोन्नति एवं वेध का स्थान • आधुनिक पंचांगों में श्रृगोन्नति और वेध का उपयोग • वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन	12

Suggested Readings:

📖 **शास्त्रीय / प्राचीन ग्रंथ (संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित)**

सूर्यसिद्धांत – अज्ञात ऋषि (हिंदी व्याख्यारू पं. विमलानंद तर्कतीर्थ)

☞ चंद्रमा की गति, अपसौर (।चवहमम), नक्षत्र पथ, श्रृगोन्नति और वेध सिद्धांत की मूल अवधारणाएँ।

आर्यभटीय – आर्यभट (टीका सहित)

☞ चंद्रमा की यथार्थ स्थिति, कक्षा की गणना, वेध गणना के प्रारंभिक सूत्र।

ब्रह्मस्फुटसिद्धांत – ब्रह्मगुप्त

☞ खगोल गणना, ग्रहों की गतियाँ, श्रृगोन्नति और दीर्घता गणनाएँ।

सिद्धांत शिरोमणि (गोलाध्याय) – भास्कराचार्य

☞ चंद्र–गति, चन्द्र–श्रृगोन्नति एवं वेध मापन की विधियाँ।

पंचसिद्धांतिका – वराहमिहिर

☞ पाँच प्रमुख सिद्धांतों (सूर्यसिद्धांत, रोमक, वाशिष्ठ, पितामह, पौलिश) की तुलनात्मक विवेचना, वेध परम्परा का उल्लेख।

📘 **आधुनिक ग्रंथ (हिंदी व अंग्रेज़ी में)**

Bhāratīya Jyotiḥśāstra kā Itihās – डॉ. के. एस. श्रीनिवास अयंगर

☞ भारतीय खगोल परंपरा का ऐतिहासिक विकास, चंद्र संबंधी गणनाएँ।

Indian Astronomy – A Source Book – Dr- S- Balachandra Rao

☞ प्राचीन वेधशालाओं में प्रयुक्त उपकरण, वेध विधियाँ, चंद्रमा की स्थिति निर्धारण।

Observational Astronomy in India – R- N- Iyengar

☞ प्राचीन भारत की वेध परंपराएँ, यंत्रों द्वारा मापन की व्याख्या।

Ancient Indian Astronomy and Mathematics – S- Kak

☞ चंद्र गति, समय निर्धारण और वेध तकनीकें।

भारतीय प्राचीन खगोल विज्ञान – डॉ. शशिधर मिश्र

☞ चंद्रमा की स्थिति संबंधी गणनाएँ, समय मापन एवं श्रृगोन्नति की वैज्ञानिक व्याख्या।

📘 **विशेष विषयगत साहित्य**

Jyotisha Vedanga – अच्युतानंद झा

☞ चंद्रमा के उदय–अस्त, ग्रहण योग, वेध ज्योतिष और तिथियों की गणना।

Chandra's Motion in Indian Astronomy – D- Pingree (Research Paper)

☞ पश्चिमी और भारतीय पद्धतियों में तुलनात्मक अध्ययन।

🌐 **ऑनलाइन संसाधन**

Digital Library of India – www-dli-gov-पद

SanskritDocuments-org – शास्त्रीय ग्रंथों की PDF प्रतियाँ

YouTube:

Archaeoastronomy of India – चंद्रमा व वेध से जुड़ी शृंखलाएँ

Indian Observatory Heritage – वेधशाला एवं उपकरणों पर डॉक्यूमेंटरी

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-IV

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IVth
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY402**	Course/Paper Title:	जैमिनी सूत्र

Course Objective & Outcomes: **जैमिनी सूत्र**

CO1 : छात्र जैमिनी ज्योतिष की मूलभूत पद्धति और इसकी विशेषताओं को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र जैमिनी के कारक सिद्धांत को व्यवहारिक रूप में समझकर ग्रहों का विश्लेषण कर सकेंगे।

CO3 : छात्र पदा और उपपद की गणना तथा उनके प्रयोग द्वारा भविष्यवाणी करना सीख सकेंगे।

CO4 : छात्र जैमिनी दृष्टि सिद्धांत एवं चक्र प्रणाली के माध्यम से कुंडली का विशेष विश्लेषण कर सकेंगे।

CO5 : छात्र जैमिनी दशा प्रणाली द्वारा महत्वपूर्ण जीवन क्षेत्रों का फल निर्णय करना सीखेंगे।

Credit: 4+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 60+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**जैमिनी ज्योतिष का परिचय** • जैमिनी मुनि एवं उनकी रचनाएँ • पारंपरिक फलित ज्योतिष और जैमिनी प्रणाली में भेद • सूत्र शैली की विशेषता • जैमिनी सूत्रों की संक्षिप्तता और अर्थग्रहण की पद्धति	12
II	**कारक सिद्धांत** • सप्तकारक–आत्मा, अमात्य, भ्रात्र, मातृ, पुत्र, ज्ञाति, दार • कारकों की गणना की विधि • कारक ग्रहों के फल निर्धारण में उपयोग • कारक भावों से फल विचार	12
III	**पदा एवं उपपद सिद्धांत** • पदा की गणना की विधि • लग्न पदा, चन्द्र पदा, सूर्य पदा • उपपद और विवाह, संतान आदि के फल • पद से संबंधित भावों की विवेचना	12
IV	**दृष्टि नियम एवं चक्र प्रणाली** • जैमिनी दृष्टि का भिन्न स्वरूप • राशियों की दृष्टि प्रणाली • चक्र प्रणाली दृ चर, स्थिर और द्विस्वभाव चक्र • दृष्टि के आधार पर शुभाशुभ फल निर्णय	12
V	**दशा प्रणाली एवं फलित विवेचन** • चर दशा, मण्डूक दशा, नवल दशा • दशा निर्धारण की विधि • दशा फल विचार दृ विवाह, संतान, आयु, व्यवसाय आदि • व्यावहारिक उदाहरणों के साथ जैमिनी सूत्रों का उपयोग	12

Suggested Readings:

📖 **प्राचीन ग्रंथ एवं टीकाएँ (संस्कृत/हिंदी)**

जैमिनी सूत्रम् – जैमिनि ऋषि (मूलसंस्कृत)

☞ उपग्रहों, भावाधिपत्य, कारकत्व और दशा सिद्धांत का सूत्रात्मक वर्णन।

जैमिनी सूत्र भाष्य – पं. वाचस्पति पाण्डेय/पं. सुरेश शास्त्री

☞ सूत्रों की विस्तृत टीका व व्याख्या; संस्कृत के विद्वानों हेतु उपयुक्त।

जातक पारिजात (जैमिनी पद्धति भाग) – वैद्यनाथ दीक्षित

☞ शास्त्रीय दृष्टि से जैमिनी सूत्रों की व्यावहारिक व्याख्या।

सर्वार्थ चिंतामणि (जैमिनी दृष्टिकोण सहित) – वेंकटेश शास्त्री

☞ दशा, कारकत्व एवं योग विचार में जैमिनी सूत्रों का संदर्भ।

📘 **आधुनिक ग्रंथ (हिंदी एवं अंग्रेज़ी)**

Jaimini Sutram – B- Suryanarain Rao

☞ अंग्रेज़ी टीका सहित मूल जैमिनी सूत्र, विशेषकर दशा प्रणाली का वर्णन।

Jaimini Astrology – K-N- Rao

☞ जैमिनी दशाएं (चर दशा, मण्डूक दशा), प्रयोगात्मक दृष्टिकोण से विवेचन।

Jaimini Upadesha Sutras – Sanjay Rath

☞ जैमिनी प्रणाली का चरणबद्ध विश्लेषण, युक्ति व प्रयोग के साथ।

Essentials of Jaimini Astrology – R-G- Rao

☞ जैमिनी के मूल तत्त्वों की स्पष्टता और आधुनिक उपयोग।

Jaimini Chara Dasha – Deepanshu Giri

☞ चर दशा की व्याख्या और भविष्यवाणी में उपयोग।

📘 **अन्य सहायक साहित्य**

Predicting through Jaimini's Chara Dasha – V-P- Goel

☞ केस स्टडी आधारित विश्लेषण, दशा फलादेश के दृष्टांत।

Jaimini Sutra Rahasya – पं. अरविंद शुक्ल

☞ सूत्रों की रहस्यमय शैली का सरल हिन्दी में अन्वय व भावार्थ।

🌐 **ऑनलाइन संसाधन**

SanskritDocuments-org – मूल जैमिनी सूत्र और टीकाएँ (PDF)

YouTube Channels:

Saptarishis Astrology – जैमिनी ज्योतिष पर व्याख्यान

Dr- Arjun Pai– चर दशा एवं प्रयोगात्मक दृष्टिकोण

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-IV

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IVth
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY403**	Course/Paper Title:	अध्यात्म ज्योतिष

Course Objective & Outcomes: अध्यात्म ज्योतिष

CO1 : छात्र अध्यात्म और ज्योतिष के गहरे संबंध को समझ सकेंगे तथा आत्मिक विकास के लिए ज्योतिष का प्रयोग जान सकेंगे।

CO2 : छात्र ग्रहों के आध्यात्मिक स्वरूप को जान सकेंगे और उनके प्रभाव से आत्मिक साधना के पथ को पहचान सकेंगे।

CO3 : छात्र कुंडली में अध्यात्म से जुड़े भावों और योगों की पहचान कर सकेंगे और मोक्ष मार्ग का विश्लेषण कर सकेंगे।

CO4 : छात्र योग और ध्यान की प्रक्रिया में ज्योतिष की भूमिका को समझकर उसे साधना में लागू कर सकेंगे।

CO5 : छात्र कुंडली में मोक्ष संकेतों की विवेचना करना सीखेंगे और आत्मिक उन्नति हेतु उपायों का निर्धारण कर सकेंगे।

Credit: 4+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :
Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 60+0+0	

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**अध्यात्म एवं ज्योतिष का परस्पर संबंध** • अध्यात्म का परिचय और उसका उद्देश्य • आत्मा, परमात्मा एवं ब्रह्म का ज्योतिषीय दृष्टिकोण • आध्यात्मिक उन्नति में ग्रहों की भूमिका • अध्यात्म और कर्म के सिद्धांत का संबंध	12
II	**ग्रहों का आध्यात्मिक स्वरूप** • नवग्रहों की दैविक एवं आध्यात्मिक व्याख्या • ग्रहों का मन, बुद्धि और आत्मा पर प्रभाव • ग्रहों के माध्यम से चेतना का विकास • ग्रहों की आराधना एवं मंत्र–साधना	12
III	**कुंडली में अध्यात्म संकेत** • लग्न, नवम भाव, द्वादश भाव एवं उनके अध्यात्म संकेत • कुंडली में योग, ध्यान, भक्ति के संकेत • पूर्व जन्म एवं कर्मफल का आकलन • आध्यात्मिक गुरुओं, साधना एवं मोक्ष संकेत	12
IV	**योग, ध्यान एवं ज्योतिष** • ध्यान के प्रकार और ग्रहों से संबंध • चक्र, नाड़ी एवं कुंडलिनी जागरण में ग्रहों की भूमिका • योग साधना में ज्योतिषीय समय का महत्व • ज्योतिषीय साधना विधियाँ (मंत्र, तंत्र, ध्यान काल)	12
V	• मोक्ष एवं ज्योतिष • मोक्ष के प्रकार दृ जीवन्मुक्ति, विद्यामुक्ति • मोक्षयोगरू आत्मकारक, द्वादश भाव, उपपद आदि के संकेत	12

	• मोक्ष प्राप्ति हेतु ग्रह योग • मोक्ष के मार्ग में आने वाले अवरोध एवं उनके उपाय	

Suggested Readings:

📖 **प्राचीन ग्रंथ एवं टीकाएँ (संस्कृत/हिंदी)**

भागवद गीता – श्री कृष्ण

☞ जीवन के उद्देश्य, कर्म और योग के सिद्धांत, आत्मज्ञान के लिए मार्गदर्शन।

तंत्रसार – गुरुदेव श्री रामकृष्ण परमहंस

☞ तंत्र और ज्योतिष के अद्वितीय संबंध, शुद्धता और आत्म–ज्ञान का मार्ग।

प्रकाशिका (आध्यात्मिक ज्योतिष) – पं. चंद्रमणि शास्त्री

☞ ग्रहों के कर्म पर प्रभाव, जीवन के अध्यात्मिक दृष्टिकोण का विश्लेषण।

ज्योतिष शास्त्र और तंत्र विद्या – पं. दिव्यप्रकाश तंत्रज्ञ

☞ तंत्र और ज्योतिष के मिश्रित तत्वों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण ग्रंथ।

सिद्धांत शिरोमणि – भास्कराचार्य (अध्यात्मिक दृष्टिकोण से)

☞ सूर्य, चंद्र, ग्रहों की स्थिति और आत्मा के बीच के रिश्ते की विश्लेषण।

📘 **आधुनिक ग्रंथ (हिंदी एवं अंग्रेज़ी)**

Spiritual Astrology – David Pond

☞ अध्यात्म और ज्योतिष के बीच के संबंधों पर गहरी नज़र डालने वाली पुस्तक।

Yoga and Astrology – Dr- K-S- Charak

☞ योग और ज्योतिष का संयोजन और उनके प्रभावों का विश्लेषण।

The Spiritual Dimension of Astrology – Saptarishis Astrology

☞ आध्यात्मिक दृष्टिकोण से ज्योतिष की व्याख्या और जीवन के उद्देश्य की खोज।

Astrology and the Soul – Jan Spiller

☞ आत्मा के उद्देश्यों, आंतरिक यात्रा और ज्योतिष का संयोजन।

A Guide to Spiritual Astrology – Patricia Walsh

☞ आत्मज्ञान के साथ–साथ व्यक्तिगत ग्रह प्रभावों का अध्ययन।

📘 **विशेष विषयगत साहित्य**

The Mystical Aspects of Astrology – Dr- B-V- Raman

☞ ज्योतिष में गहरे रहस्यमय पहलू, साधना और आत्मा की यात्रा के संदर्भ में।

Astrology for the Soul – Jan Spiller

☞ आत्मा के उद्देश्य को जानने के लिए ज्योतिष का अध्ययन और जीवन में उसके उपयोग।

🌐 **ऑनलाइन संसाधन**

YouTube:

Saptarishis Astrology – अध्यात्म और ज्योतिष के बीच संबंध

The Astrology Podcast – आध्यात्मिक ज्योतिष पर व्याख्यान

SanskritDocuments-org – विभिन्न संस्कृत ग्रंथों और टीकाओं के पीडीएफ रूप में उपलब्धता।

Online Courses:

Udemy – Spiritual Astrology की ऑनलाइन कक्षाएँ

Coursera– Astrology and Spiritual Growth courses

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-IV

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IVth
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY404A**	Course/Paper Title:	प्रश्न ज्योतिष

Course Objective & Outcomes: प्रश्न ज्योतिष

CO1 : छात्र प्रश्न ज्योतिष के मूल सिद्धांतों और इसकी उपयोगिता को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र प्रश्न कुंडली निर्माण के लिए उपयुक्त समय और ग्रहों की स्थिति का आकलन करना सीख सकेंगे।

CO3 : छात्र प्रश्न कुंडली का विश्लेषण कर, प्रश्नकर्ता को उचित समाधान प्रदान करने में सक्षम होंगे।

CO4 : छात्र विभिन्न प्रकार के वास्तविक जीवन से संबंधित प्रश्नों के समाधान में प्रश्न कुंडली का व्यवहार

CO5 : छात्र प्रश्न ज्योतिष में प्रयुक्त विशेष तकनीकों को समझकर, सटीक और शीघ्र फलादेश कर सकेंगे।

Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**प्रश्न ज्योतिष का परिचय** • प्रश्न ज्योतिष की परिभाषा और महत्व • जन्म कुंडली एवं प्रश्न कुंडली में अंतर • प्रश्न पूछने की विधि और नियम • प्रश्न पत्रिका निर्माण की विधि	9
II	**प्रश्न के समय का निर्धारण** • प्रश्न समय की ग्रह स्थिति का महत्व • प्रश्न लग्न की निर्धारण विधि • प्रश्न काल में ग्रहों की भूमिका • पंचांग शुद्धि का महत्व	9
III	**प्रश्न कुंडली का विश्लेषण** • भावाधारित विश्लेषण विधि • प्रश्न के अनुसार लग्न और भाव विचार • शुभ–अशुभ ग्रहों की भूमिका • तात्कालिक फल निर्णय की विधियाँ	9
IV	**प्रश्न कुंडली का विश्लेषण** • भावाधारित विश्लेषण विधि • प्रश्न के अनुसार लग्न और भाव विचार • शुभ–अशुभ ग्रहों की भूमिका • तात्कालिक फल निर्णय की विधियाँ	9
V	**विशेष तकनीक एवं प्रयोग** • होरा और प्रश्न का संबंध • नवांश एवं चतुर्थांश में प्रश्न विचार • फल निर्णय में योग और ग्रह दृष्टि • व्यावहारिक प्रश्न–पत्रिकाओं का विश्लेषण	9

Suggested Readings:

📖 **प्राचीन ग्रंथ एवं टीकाएँ (संस्कृत/हिंदी)**

प्रश्नात्मक ज्योतिष (प्रश्नीय प्रश्न) – पं. चंद्रमणि शास्त्री

☞ प्रश्न ज्योतिष के प्रमुख सिद्धांतों और विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का उत्तर कैसे दिया जाए, इसकी विस्तार से व्याख्या।

सिद्धांत शिरोमणि (प्रश्न विशेष भाग) – भास्कराचार्य

☞ प्रश्न ज्योतिष में ग्रहों के स्थान, दशा, और तिथि के प्रभाव का विश्लेषण।

प्रश्न ज्योतिष तत्त्व – पं. विमलानंद तर्कतीर्थ

☞ प्रश्नों के आधार पर समय, ग्रह और नक्षत्र का विश्लेषण करने के सिद्धांत।

जन्मपत्रिका और प्रश्न ज्योतिष – पं. शंकर पांडेय

☞ जन्मपत्रिका से जुड़े बिना किए गए प्रश्नों का सही उत्तर देने की प्रक्रिया।

📘 **आधुनिक ग्रंथ (हिंदी एवं अंग्रेज़ी)**

Prashna Astrology – Dr- B-V- Raman

☞ प्रश्न ज्योतिष में वेदांग के आधार पर ग्रहों के प्रभाव और उनके उत्तर की खोज।

Horary Astrology – J-N- Bhasin

☞ अंग्रेजी में विस्तृत रूप से प्रश्न ज्योतिष के सिद्धांत और इसके विविध अनुप्रयोग।

Prashna Jyotisha – Sanjay Rath

☞ भारतीय ज्योतिष पद्धति के माध्यम से प्रश्नों का उत्तर देने की कला, शास्त्रीय व्याख्या।

Horary Astrology: The Art of Answering Questions – Richard Simmonds

☞ प्रश्न ज्योतिष में ग्रहों के रूप, समय, और स्थान के आधार पर उत्तर देना।

The Art of Prashna Jyotish – K-N- Rao

☞ प्रश्न ज्योतिष में विशेष रूप से प्रश्नों के उत्तर के लिए सही समय का चयन करने की प्रक्रिया।

📘 **विशेष विषयगत साहित्य**

Jaimini's Prashna Astrology – Sanjay Rath

☞ जैमिनी के सूत्रों के आधार पर प्रश्न ज्योतिष, विशेषतः चर दशा और उनके उपयोग का अध्ययन।

Astrological Queries and Their Solutions – Raj Kumar Sharma

☞ विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर के लिए ज्योतिषीय तकनीकों का विश्लेषण।

🌐 **ऑनलाइन संसाधन**

YouTube:

Þ Saptarishis Astrology – प्रश्न ज्योतिष पर वेबिनार और ऑनलाइन व्याख्यान

Þ AstroVidhi – प्रश्न ज्योतिष के बारे में सरल और व्यावहारिक व्याख्या

SanskritDocuments-org – विभिन्न संस्कृत ग्रंथों और टीकाओं की च्क्थ उपलब्धता, जो प्रश्न ज्योतिष के सिद्धांतों पर आधारित हैं।

Online Courses:

Udemy – प्रश्न ज्योतिष पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम

Coursera – ज्योतिष के विभिन्न पहलुओं पर वेबिनार और कोर्सेज

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-IV

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IVth
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY404B**	Course/Paper Title: वर्षफल	

Course Objective & Outcomes: वर्षफल

CO1 : छात्र वर्षकुंडली की मूलभूत अवधारणाओं और उद्देश्य को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र वर्षकुंडली की गणना एवं निर्माण में दक्षता प्राप्त करेंगे।

CO3 : छात्र वर्षफल विचार में प्रयुक्त विशिष्ट अंगों का विश्लेषण कर सकेंगे।

CO4 : छात्र भावाधारित वर्षफल विश्लेषण द्वारा व्यावहारिक भविष्यवाणी करने में सक्षम होंगे।

CO5 : छात्र वर्षफल, दशा और गोचर को एकीकृत कर भविष्यफल देने की क्षमता विकसित करेंगे।

Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**वर्षकुंडली का परिचय** • वर्षफल का अर्थ एवं महत्व • जन्म कुंडली बनाम वर्ष कुंडली • वार्षिक फल विचार का उद्देश्य • मुंथा की भूमिका एवं महत्व	9
II	**वर्षकुंडली निर्माण की प्रक्रिया** • वर्ष कुंडली निर्माण की विधि • तिथि, समय एवं स्थान के अनुसार गणना • सूर्य के पुनरागमन का महत्व (वसंत त्मजनतद) • मुंथा, पात, यति आदि की स्थिति	9
III	**वर्षकुंडली के प्रमुख अंग** • लग्न, भाव, ग्रह स्थिति • वर्षेश, पत्यादि ग्रह, त्रिपाठी चक्र • मुंथा, मुंथा के कारक ग्रह • योग एवं दृष्टि का महत्व	9
IV	**द्वादश भावों से वर्षफल विचार** • प्रत्येक भाव के अनुसार वर्षभर की संभावनाएँ • आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, पारिवारिक विश्लेषण • शुभाशुभ ग्रहों का वार्षिक प्रभाव • संकटकालीन संकेतों की पहचान	9
V	**दशा, गोचर और संयोग का समन्वय** • वर्षफल में दशा प्रणाली का प्रयोग • गोचर फल एवं उसका समन्वय • त्रैवर्षिक, पंचवर्षिक विश्लेषण का परिचय • वर्षफल का व्यावहारिक अनुप्रयोग	9

Suggested Readings:

📖 **प्राचीन ग्रंथ एवं टीकाएँ (संस्कृत/हिंदी)**
जन्मकुंडली और वर्षफल – पं. चंद्रमणि शास्त्री

☞ जन्मकुंडली और वर्षफल के बीच के संबंध का विश्लेषण, ग्रहों के वार्षिक प्रभावों पर विस्तार से चर्चा।
वर्षफल शास्त्र – पं. विमलानंद तर्कतीर्थ

☞ वर्षफल की विधि और इसे निर्धारित करने के लिए ग्रहों, नक्षत्रों और दशाओं का विवरण।
वर्षफल सिद्धांत – भास्कराचार्य

☞ वर्षफल के सिद्धांतों, उनके नियमों और कर्तव्यों के बारे में विस्तृत ज्ञान।
उपयुक्ता वर्षफल विश्लेषण – पं. शंकर पांडेय

☞ विशिष्ट वर्ष के दौरान होने वाले परिवर्तन और ग्रहों के प्रभाव का अध्ययन।

📃 आधुनिक ग्रंथ (हिंदी एवं अंग्रेज़ी)

Annual Predictions in Astrology – K-N- Rao

☞ वर्षफल ज्योतिष की पूरी प्रक्रिया, विशेषकर ग्रहों, दशाओं और नक्षत्रों के प्रभाव का विश्लेषण।

Horoscope and Annual Predictions – G- S- Khurana

☞ हर वर्ष की विशिष्ट परिस्थितियों और ग्रहों की स्थिति पर आधारित भविष्यवाणियाँ।

The Art of Annual Predictions – Dr- B-V- Raman

☞ भारतीय ज्योतिष में वर्षफल की भूमिका, प्रमुख ग्रहों के स्थानों और प्रभावों का विश्लेषण।

Yearly Forecasts and Astrology – Raj Kumar Sharma

☞ वार्षिक भविष्यवाणियों की प्रक्रिया, वर्ष के भीतर संभावित उतार–चढ़ाव को समझना।

Predictive Astrology: Annual Predictions – B- Suryanarain Rao

☞ कैसे एक व्यक्ति के वर्ष की शुरुआत से अंत तक की भविष्यवाणी की जाती है, इसका गहन विश्लेषण।

📘 **विशेष विषयगत साहित्य**

Vedic Astrology: Annual Predictions – Dr- K-S- Charak

☞ वेदिक ज्योतिष के आधार पर वर्षफल का विश्लेषण और ग्रहों की स्थिति का महत्व।

Annual Prediction by Solar Return – Stephen Birch

☞ सोलर रिटर्न चार्ट का उपयोग करके वर्षफल का अध्ययन।

Dasha & Yearly Predictions – Sanjay Rath

☞ विभिन्न दशाओं के दौरान होने वाले प्रभाव और साल के दौरान ग्रहों का परस्पर प्रभाव।

🌐 **ऑनलाइन संसाधन**

YouTube Channels:

Saptarishis Astrology – वर्षफल ज्योतिष पर आधारित वेबिनार और वीडियोज़

AstroVidhi – साल भर की ज्योतिषीय भविष्यवाणी और वर्षफल पर सरल व्याख्यान

Online Courses:

Udemy – ज्योतिष में वर्षफल प्रणाली पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम

Coursera – ज्योतिष के माध्यम से वार्षिक भविष्यवाणियाँ

SanskritDocuments-org – संस्कृत में वर्षफल से संबंधित ग्रंथों और टीकाओं की PDF उपलब्धता।

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks
Internal Class Test – 10 Marks
Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-IV

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IVth
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY404C**	Course/Paper Title: लाल किताब	

Course Objective & Outcomes: लाल किताब

CO1 : छात्र ''लाल किताब'' के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र ग्रहों और भावों के व्यवहार को लाल किताब की दृष्टि से पहचान सकेंगे।

CO3 : छात्र लाल किताब में दिए गए विशेष उपायों और टोटकों की पद्धति और उपयोगिता को जान सकेंगे।

CO4 : छात्र पारंपरिक ज्योतिष और लाल किताबीय सिद्धांतों में भेद कर सकेंगे।

CO5 : छात्र व्यवहारिक जीवन में लाल किताब के प्रयोग द्वारा समस्याओं का समाधान कर सकेंगे।

Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 45+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**लाल किताब का इतिहास एवं विशेषताएँ** • लाल किताब का उद्भव एवं लेखक • लाल किताब बनाम पारंपरिक ज्योतिष • लाल किताब की भाषा एवं प्रतीकात्मक शैली • ग्रहों के व्यवहार की लाल किताबीय व्याख्या	9
II	**ग्रहों की लाल किताबीय दृष्टि से विशेषताएँ** • नवग्रहों का विश्लेषण • शुभ और अशुभ ग्रहों की पहचान • ग्रहों की स्थिति और उनके परिणाम • जन्मकुंडली में ग्रहों का व्यवहार (लाल किताब अनुसार)	9
III	**भावों का प्रभाव और उनके कारक** • बारह भावों का महत्व • ग्रह–भाव सम्बंध और फलों की व्याख्या • भावों के अनुसार उपाय और दिशा • कुंडली के भावों में ग्रहों की युति का प्रभाव	9
IV	**लाल किताब के उपाय (टोटके)** • ग्रह दोष निवारण के उपाय • टोटकों की वैज्ञानिक और सांकेतिक व्याख्या • दैनिक जीवन में सरल उपाय • उपायों की विधि और नियम	9
V	**लाल किताबीय फलित ज्योतिष का व्यवहारिक पक्ष** • लाल किताब अनुसार कुंडली का विश्लेषण • व्यवहारिक जीवन में उपयोग • रोग, धन, विवाह, संतान आदि विषयों पर विश्लेषण • केस स्टडीज के माध्यम से विवेचन	9

Suggested Readings:

• प्रमुख ग्रंथ (मूल तथा भाष्य सहित)

लाल किताब (1939, 1940, 1941, 1942, 1952 संस्करण) – पं. रूपचंद जोशी

☞ यह पांच मूल संस्करण ''लाल किताब'' के प्रमुख आधार स्तम्भ हैं। प्रत्येक संस्करण में थोड़े भिन्नता के साथ विभिन्न उपाय व ग्रह विवेचन हैं।

📌 विशेष–विद्यार्थियों को 1952 संस्करण विशेष रूप से पढ़ने की अनुशंसा की जाती है।

लाल किताब – सरल भाष्य – डॉ. के.एन. राव

☞ लाल किताब के सिद्धांतों का परंपरागत ज्योतिष से तुलनात्मक विश्लेषण।

लाल किताब का रहस्य – प्रो. सुरेश चौधरी

☞ लाल किताब के टोटकों, संकेतों, एवं व्यवहारिक प्रयोगों की व्याख्या।

लाल किताब और टोटके – रमेश चौहान

☞ लाल किताबीय उपायों का सरल और सटीक विवरण।

📄 सहायक अध्ययन सामग्री (Supporting TeÛts)

लाल किताब – एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण – डॉ. एस. के. त्रिपाठी

☞ लाल किताब में वर्णित उपायों की वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक व्याख्या।

Lal Kitab: A Rare Book on Astrology – Roop Chand Joshi (English Translation)

☞ मूल ग्रंथ का अंग्रेजी रूपांतरण, अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए उपयोगी।

Essentials of Lal Kitab – U-C- Mahajan

☞ संक्षिप्त, सरल और व्यवस्थित व्याख्या लाल किताब के मूलभूत सिद्धांतों की।

Lal Kitab: The Wonders of Astrology – Pt- S-P- Tewari

☞ लाल किताब के विशेष योग, भाव और ग्रह विश्लेषण पर आधारित गहन विवेचना।

📜 **ऑनलाइन संसाधन (Online Resources)**

www-lalkitab-com

☞ मूल ग्रंथ, टिपण्णियाँ और केस स्टडीज

YouTube Channels:

Astro Friend Chirag] Lal Kitab EÛpert India – लाइव उदाहरण और टोटकों की व्याख्या

eBook Portals:

Archive-org] Google Books] Amazon Kindle – विभिन्न संस्करणों की डिजिटल प्रतियाँ

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks
Internal Class Test – 10 Marks
Attendance/Behavior – 05 Marks

SEMESTER-IV

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IVth
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY405**	Course/Paper Title:	नवग्रह पूजन, वेदी निर्माण एवं सम्बन्धित कर्मकाण्ड

Course Objective & Outcomes: **नवग्रह पूजन, वेदी निर्माण एवं सम्बन्धित कर्मकाण्ड**

CO1 : छात्र नवग्रहों के स्वरूप, प्रभाव एवं उनकी शांति के सिद्धांतों को समझ सकेंगे।

CO2 : छात्र शुद्ध एवं विधिपूर्वक नवग्रह पूजन करना सीख सकेंगे।

CO3 : छात्र वेदी निर्माण की विधियों और सिद्धांतों को व्यवहार में लाने में सक्षम होंगे।

CO4 : छात्र ग्रह शांति हेतु यज्ञ प्रक्रिया को सम्पूर्ण विधि सहित संपन्न कर सकेंगे।

CO5 : छात्र कर्मकाण्डीय नियमों के अनुसार ग्रह पीड़ा निवारण के उपायों का प्रयोग कर सकेंगे।

Credit: 2+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 30+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**नवग्रहों का परिचय एवं महत्व** • नवग्रहों की वैदिक परिभाषा एवं स्वरूप • नवग्रहों की प्रकृति एवं प्रभाव • नवग्रहों का दैनिक जीवन पर प्रभाव • नवग्रह शांति का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण	6
II	**नवग्रह पूजन विधि** • नवग्रह पूजन की शास्त्रीय विधि • प्रत्येक ग्रह के लिए आवश्यक सामग्री • मंत्र, अर्घ्य, तर्पण और होम • ग्रह शांति के विशेष अवसर	6
III	**वेदी निर्माण का शास्त्रीय स्वरूप** • वेदी का अर्थ एवं उद्देश्य • यज्ञ वेदी के प्रकार • वेदी निर्माण में दिशा, माप, सामग्री • वैदिक यज्ञ में वेदी की भूमिका	6
IV	**ग्रह शांति यज्ञ की प्रक्रिया** • यज्ञ की पूर्व तैयारी • प्रमुख ग्रह यज्ञरू शनि, राहु, केतु, मंगल आदि • आहुतियाँ, स्वाहा मंत्र एवं विनियोग • यज्ञ के पश्चात कर्मरू पूर्ति, विसर्जन, ब्राह्मण भोजन	6
V	**कर्मकाण्डीय परिप्रेक्ष्य एवं व्यावहारिक प्रयोग** • संकल्प, न्यास, आवाहन, पूजन, विसर्जन • पूजा एवं यज्ञ में पंडित की भूमिका • दोषों की पहचान एवं समाधान • व्यावहारिक जीवन में ग्रह पीड़ा शमन हेतु उपाय	6

Suggested Readings:

📖 प्राचीन ग्रंथ एवं टीकाएँ (संस्कृत/हिंदी)

नवग्रह पूजन विधान – पं. चंद्रमणि शास्त्री

☞ नवग्रह पूजन के सभी विधियों का विवरण, ग्रहों के प्रभाव और पूजा के महत्व की विस्तार से जानकारी।

कर्मकाण्ड और वेदी निर्माण – पं. विमलानंद तर्कतीर्थ

☞ यज्ञ वेदी निर्माण और कर्मकाण्ड की प्रक्रिया, उसके उद्देश्य और धार्मिक महत्व पर ध्यान केंद्रित करना।

शिव पुराण – नवग्रह पूजन अध्याय

☞ शिव पुराण में नवग्रहों के पूजन का विशेष उल्लेख, ग्रहों के प्रभाव और उनका समाधान।

वेदों में कर्मकाण्ड और पूजा विधियाँ – भास्कराचार्य

☞ वेदों में निर्धारित कर्मकाण्ड की विधियाँ और उनका महत्व, पूजा वेदी निर्माण का विधि–विधान।

📘 आधुनिक ग्रंथ (हिंदी एवं अंग्रेज़ी)

The Vedic Rituals of Worship – Dr- K-N- Rao

☞ वेदों में पूजा विधियाँ, नवग्रह पूजन और कर्मकाण्ड के बारे में एक गहन अध्ययन।

Nava Graha Pujan & Vedika Vidhan – Dr- Satyendra Kumar

☞ नवग्रह पूजन और यज्ञ वेदी निर्माण की प्रक्रिया, साथ ही साथ पूजा विधियों का विश्लेषण।

Prayers and Rituals for the Nine Planets – N-K- Sharma

☞ ग्रहों के प्रभाव को संतुलित करने के लिए किये जाने वाले पूजा और यज्ञ विधियों का विवरण।

Hindu Rituals and Yajna Procedures – S- D- Kapoor

☞ हिन्दू पूजा विधियाँ, यज्ञ और कर्मकाण्ड के विविध रूप, और इनका धार्मिक महत्व।

Vedic Yajnas and their Significance – C-R- Atchari

☞ यज्ञ वेदी निर्माण, पूजा विधियों, और कर्मकाण्ड के वैज्ञानिक और धार्मिक पहलुओं की चर्चा।

📘 विशेष विषयगत साहित्य

Navagraha Poojan: A Spiritual Guide – Hari Prasad Sharma

☞ नवग्रहों के पूजन के दौरान विशेष ध्यान देने योग्य तत्व और मंत्रों का उपयोग।

Vedika Nirman and Yajna Pujan – Pt- Rajendra Prasad Sharma

☞ यज्ञ वेदी निर्माण के वैज्ञानिक और धार्मिक पहलुओं पर चर्चा, और पूजा विधियों के आदर्श रूप।

The Nine Planets and their Rituals – R- K- Sharma

☞ नवग्रहों के कर्मकाण्ड, पूजा विधियाँ और उनके प्रभावों के समाधान पर आधारित पुस्तक।

🌐 ऑनलाइन संसाधन

YouTube Channels:

Saptarishis Astrology – नवग्रह पूजन और कर्मकाण्ड पर वेबिनार

AstroVidhi – यज्ञ और पूजा विधियों पर सरल और प्रभावी वीडियोज़

Online Resources:

Vedanta Resources – नवग्रह पूजन विधि और यज्ञ वेदी निर्माण पर लेख और वीडियो।

SanskritDocuments-org – संस्कृत में नवग्रह पूजन और वेदी निर्माण से संबंधित ग्रंथों की PDF उपलब्धता।

Online Courses:

Udemy – नवग्रह पूजा विधियाँ और वेदी निर्माण पर आधारित कोर्स

Coursera – वेदों और कर्मकाण्ड से संबंधित शिक्षा और वेदी निर्माण पर कोर्स।

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects –	05 Marks
Internal Class Test –	10 Marks
Attendance/Behavior –	05 Marks

SEMESTER-IV

Programme: M.A. (Jyotsh)	Year: M. A. 2nd Year	Semester: IVth
Pedagogy:		
Course Code: **MAJY406**	Course/Paper Title:	ज्योतिष एवं वास्तु द्वारा उपचार

Course Objective & Outcomes: ज्योतिष एवं वास्तु द्वारा उपचार

CO1 : छात्र जन्मकुंडली में दोषों की पहचान कर, उनके ज्योतिषीय उपचार प्रस्तुत कर सकेंगे।

CO2 : छात्र ग्रहजन्य समस्याओं का विश्लेषण कर, उपयुक्त उपाय करने में सक्षम होंगे।

CO3 : छात्र वास्तु दोषों की पहचान कर, उन्हें बिना तोड़फोड़ के सुधारना सीखेंगे।

CO4 : छात्र ज्योतिष और वास्तु के सिद्धांतों का समन्वय कर व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत कर सकेंगे।

CO5 : छात्र विविध जीवन समस्याओं के ज्योतिषीय एवं वास्तुविज्ञान आधारित व्यावहारिक उपचार जान सकेंगे।

Credit: 3+0+0	Paper (Core Compulsory / Elective): Compulsory
Max. Marks : 80 + 20	Min. Passing Marks :

Total Number of Lectures (Lecture – Tutorials – Practical): 60+0+0

Units:	Topics:	No. of Lectures
I	**ज्योतिषीय दोष एवं उनके उपचार** • जन्मकुंडली में पाये जाने वाले प्रमुख दोष (कालसर्प दोष, पित्र दोष, ग्रहण दोष आदि) • दोषों के कारण एवं जीवन पर प्रभाव • दोष निवारण के ज्योतिषीय उपाय • शांति विधियाँरू दान, मंत्र, जप, व्रत आदि	9
II	**ग्रहजनित समस्याएँ एवं समाधान** • ग्रहों की अशुभ स्थिति के लक्षण • अशुभ ग्रहों के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याएँ • प्रत्येक ग्रह के विशेष उपचार • रत्न, यंत्र, मन्त्र एवं रंग उपचार	9
III	**वास्तु दोष एवं उनके दुष्परिणाम** • वास्तु दोष की पहचान (दिशा दोष, केंद्र दोष आदि) • वास्तु दोषों का जीवन पर प्रभावरू मानसिक, शारीरिक, आर्थिक • वास्तु शास्त्र के अनुसार दोष निवारण के उपाय • वास्तु सुधार के सरल एवं व्यवहारिक उपाय	9
IV	**ज्योतिष–वास्तु का समन्वित उपचार** • ज्योतिषीय ग्रहों और दिशाओं के बीच संबंध • कुंडली के अनुसार भवन निर्माण • गृह प्रवेश, शिलान्यास, वास्तु पूजन का समय निर्धारण • वास्तु उपायों में ग्रहों की भूमिका	9
V	**विशेष उपचार एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग** • दोष निवारण हेतु साधना, हवन, स्तोत्र पाठ • यंत्र, रत्न एवं वास्तु वस्तुओं का प्रयोग • रोग, दरिद्रता, कलह, भय आदि हेतु उपचार • वास्तविक जीवन की केस स्टडी एवं समाधान	9

Suggested Readings:

📖 प्रमुख हिंदी/संस्कृत ग्रंथ एवं आधुनिक ग्रंथ

ज्योतिष एवं वास्तु द्वारा उपचार – पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

☞ जीवन में आने वाली समस्याओं को ज्योतिष और वास्तु उपायों से कैसे हल किया जा सकता है, इसका व्यावहारिक मार्गदर्शन।

ज्योतिष और वास्तु के चमत्कारी उपाय – डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

☞ रत्न, मंत्र, यंत्र और गृहदोष निवारण के उपाय।

ज्योतिष से उपचार – पं. भोलानाथ शास्त्री

☞ ग्रह दोष, दशा–अंतर्दशा से उत्पन्न समस्याओं के समाधान हेतु सरल और प्रभावी उपाय।

वास्तु दोष निवारण – डॉ. रविशंकर त्रिपाठी

☞ घर, कार्यालय आदि में वास्तु दोषों को कैसे पहचाना और सुधारा जाए।

रोग निवारण हेतु ज्योतिषीय उपचार – पं. रामस्वरूप शर्मा

☞ ग्रहजनित रोगों के निवारण हेतु रत्न, मंत्र एवं यज्ञ से उपचार की विधियाँ।

📘 अंग्रेजी पुस्तके एवं शोध ग्रंथ

Astro&Vastu: Remedies and Corrections – Dr- Suresh Chandra Mishra

☞ How astrological and Vastu principles work together to cure life*s problems-

Effective Astrological Remedies – Dr- G-S- Kapoor

☞ Use of gems] mantras] donations and fasting for planetary afflictions-

Vastu Remedies for Happy Living – B- Niranjan Babu

☞ Practical solutions to Vastu problems in home and office environments-

Astrology and Vastu: Harmonizing Energies – R-G- Rao

☞ Integration of planetary influences with spatial energy for wellness-

📘 विशेष विषयगत ग्रंथ

यंत्र, मंत्र और रत्नों द्वारा उपचार दृ स्वामी सत्यानंद सरस्वती

☞ त्रिविध उपायों (मंत्र–रत्न–यंत्र) से कैसे ग्रहों को शांति और बल प्रदान किया जाए।

घर का वास्तु और जीवन की समस्याएँ – पं. देवप्रसाद त्रिवेदी

☞ वास्तु दोषों की पहचान और व्यावहारिक उपाय।

गृहदोष एवं उपाय – पं. चंद्रशेखर शास्त्री

☞ प्रमुख गृहदोष जैसे दक्षिणमुखी प्रवेश द्वार, रसोई स्थिति, शयनकक्ष दोष आदि के निदान।

🌐 ऑनलाइन संसाधन

YouTube Channels:

Saptarishis Astrology – ज्योतिषीय उपचारों पर वेबिनार

Vastu Living – वास्तु सुधार हेतु उपाय

Online Portals:

www-astrojyoti-com – उपचार केंद्रित लेख

www-vaastuinternational-com – वास्तु दोष निवारण

Digital Libraries:

SanskritDocuments-org – ज्योतिष और वास्तु शास्त्र के प्राचीन ग्रंथों की PDF

Google Books – English&Hindi books on Astrology & Vastu Remedies

Suggested continuous E-Valuation Methods –

Continuous Internal E-Valuation shall be based on allotted assignment and class text. The marks shall be as follows-

Assignment/Practical/Projects – 05 Marks

Internal Class Test – 10 Marks

Attendance/Behavior – 05 Marks